पथिकोद्‌गार

द्वितीय-भाग

उपदेश आदेश कीर्तन

— लेखक —
साधु वेष में एक पथिक

साधना पॉकेट बुक्स
दिल्ली - 110007

■ प्रकाशक :
साधना पॉकेट बुक्स
दिल्ली - 110 009
दूरभाष : 2516715, 2914161

संस्करण 1997

■ मूल्य : 15.00 रुपये
पन्द्रह रुपये मात्र
न्यौछावर मूल्य :

■ लेज़र कम्पोज़िंग सेटिंग :
कैट कम्प्यूटर सर्विसिज़
M-3, A-20, इन्द्रप्रस्थ भवन, मुखर्जी नगर,
दिल्ली-9 दूरभाष : 7250112

■ मुद्रक : : जी० आर० प्रिंटर्स, गांधी नगर, दिल्ली-31

विषय सूची

दैनिक प्रार्थना

हे प्रेममय प्रभु ऐसी दया हो,
जीवन निरर्थक जाने न पाये।
जब तक अविद्या अज्ञान में हम,
कुछ बन न सकता मेरे बनाये॥
ऐसा जगा दो फिर सो न जायें,
साधक बनें प्रेम प्रज्ञा जगाये।
ममता अहंता को त्याग पायें,
भय भ्रान्ति दुःख कुछ भी रह न जाये॥
वह योग्यता दो सेवा करें हम,
कष्टों के सम्मुख धीरज धरें हम।
अपना हृदय सद्गुण से भरें हम।
मन में न कोई दुर्भाव आये॥
तुमने दयामय नरतन दिया है,
यह बुद्धि दी है, यह मन दिया है।
निज पूर्णता का साधन दिया है,
उपयोग की विधि सद्गुरु बताये॥
हे प्रभु हमें निरभिमानी बना लो,
धन मान श्रम के दानी बना लो।
सर्वत्र अपना ध्यानी बना लो,
हम हैं पथिक यह आशा लगाये॥

पद 1

अज्ञान में तुम जो कुछ भी मानते हो मन में।
जो सन्त सत्य दर्शी वे जानते जीवन में ॥1॥

वो देखते क्षण-क्षण में कण-कण में परम प्रभु को।
तुम खोजते फिरते हो मन्दिर में, कुन्ज बन में ॥2॥

तुम माने हुए प्रभु की प्रिय झाँकी सजाते हो।
वो देखते उसे जिसके चीथड़े हैं तन में ॥3॥

वह आह सुन दुखी की रक्षा के लिये आतुर।
तुम वाह-वाह करते संकीर्तन भजन में ॥4॥

वह कर रहे रोगी के उपचार की व्यवस्था।
तुम ध्यान कर रहे हो प्रभु का किसी चमन में ॥5॥

तुम मधुर वाद्यगायन में प्रभु को रिझाते हो।
तब वो लगे होते हैं पतितों के संगठन में ॥6॥

निष्काम सिद्ध वे हैं तुम हो सकाम साधक।
वे कर्म में मगन हैं तुम व्यस्त हो कथन में ॥7॥

तुम प्रभु को नहीं, प्रभु से धनमान भोग चाही।
निष्काम तृप्त पथिक है सच्चिदानन्द घन में ॥8॥

पद 2

अरे मित्र तुमने अभी तक किया क्या।
किया कुछ तो बदले में उसके लिया क्या ॥1॥

लिया जो भी कुछ वह रहेगा कहां तक।
विनाशी को लेकर जिया तो जिया क्या ॥2॥

नहीं हो सकी तृप्ति जिसमें किसी की।
ये इन्द्रिय विषय रस पिया तो पिया क्या ॥3॥

तनिक ध्यान दे करके यह देख लेना।
जो परलोक में मिल सके वो किया क्या ॥4॥

पथिक दीन दुखियों का दुख देख करके।
दयासे द्रवित जो न हो वह हिया क्या ॥5॥

पद 3

ओ धन के लोभी जन जागो लोभ पाप का बाप है।
इसकी सगी बहिन है चिन्ता तृष्णा सखी अनाप है ॥1॥
जितना लोभ अधिक होगा उतना ही क्रोध तपायेगा।
आत्मभाव से लोभ न हो तो क्रोध न तुम्हें सतायेगा।
लोभी तो अपने को दण्डित करता अपने आप है ॥2॥ ओ.
लोभी ललचाता पर धन में लोभी चोरी करता है।
अधिक धनी को देख देखकर जलता कुढ़-कुढ़ मरता है।

दान नहीं दे पाता लेता दुनियाँ का अभिशाप है ॥3 ॥ ओ.
लोभी ही तो दम्भी द्वेषी स्वजनों का द्रोही होता।
धन की रक्षा करते-करते भरता पाप भार ढोता।
जम दूतों से बांधा जाता करता रुदन विलाप है ॥4 ॥ ओ.
लोभी में मूर्खता मूढ़ता बढ़ती निर्दयता रहती।
मन में अति कठोरता लेकिन वाणी में मृदुता रहती।
भूला प्रभु को करता धन का सुमरन चिन्तन जाप है ॥5 ॥
लोभ नहीं तब भय मिथ्या है होता भेदभाव का अन्त।
समता प्रेम पूर्णता से ही मानव हो जाता है सन्त।
लोभ रहित जो पथिक उसी का मिटता सब सन्ताप है ॥6 ॥

पद 4

इस जग में जो कुछ करना है तुम बुद्धिपूर्वक जान लो।
नश्वर तन में रहने वाले अविनाशी को पहचान लो ॥1 ॥
कोई दूसरा करे न करे पर तुम नेकी करते जाओ।
देखो न किसी के दोष कहीं सबके गुण ही गुण छान लो ॥2 ॥
जो कुछ दोगे वह कई गुना बढ़कर तुमको मिल जायेगा।
दुख दो न किसी को सुख ही दो पर हित का ही व्रत ठान लो ॥3 ॥
जो कुछ भी तुमको मिला हुआ उसका ही सदुपयोग करो।
बिन माँगे मिलता जायेगा लघुता छोड़ो गुरू ज्ञान लो ॥4 ॥
जो वस्तु तुम्हें दिखती अपनी वह साथ नहीं रह जायेगी।
तुम पथिक प्रेममय परमेश्वर को सब विधि अपना मान लो ॥5 ॥

पद 5

इस दुनियाँ में सार यही है मिले परम आनन्द स्वयं में ॥ टेक ॥
नाम कीर्तन में या जप में इन्द्रिय संयम हठ व्रत तप में।
साधक का आधार यही है मिले परम आनन्द स्वयं में। इस०।
तीर्थ धाम में दान धर्म में योग यज्ञ निष्काम कर्म में।
पापों से उद्धार यही है मिले परम आनन्द स्वयं में। इस०।
चतुर शिरोमणि पण्डित ज्ञानी निश्चल चित्त अभ्यासी ध्यानी।
भक्तों का उद्धार यही है मिले परम आनन्द स्वयं में। इस०।
अपने सर्वस जीवन धन से कर्मों से वाणी से मन से।
पथ में पथिक पुकार यही है मिले परम आनन्द स्वयं में। इस०।

पद 6

ऐ पथिक तू क्या न पाता ॥
किसलिए कितने युगों से यहाँ बारम्बार आता। टेक।
स्वर्ग में जा खोज डाला, नर्क का भी पड़ा पाला।
आज इतना देख सुनकर भी न कुछ संतोष लाता। ऐ०।
कभी विस्तृत राज पाकर, विपुल धन जन बल बढ़ाकर
यहाँ से चलते समय बस सदा खाली हाथ जाता। ऐ०।
वही मन की वासनायें, उन्हीं पैरों में घुमायें।
जहां से जाता वहीं पर पुनः क्यों चक्कर लगाता। ऐ०।

भोग कर जिनमें क्षणिक सुख, देखता परिणाम में दुःख
उसकी रमणीयता में मुग्ध होकर मन रमाता। ऐ०।
बार-बार विचार करतू, मोह दल-दल पार कर तू।
सत्य चिंतन भूल करके क्यों असत के गीत गाता। ऐ०।
सत नियम पहचान ले तू, शुद्ध विधि को जान ले तू।
पथिक पतनोत्थानमय निज भाग्य का तू ही विधाता ॥ऐ०॥

पद 7

ऐ मन श्री हरि के गुण गावो
उठो जागो आँखें खोलो जीबन व्यर्थ न कहीं बितावो ॥टेक
जैसी चर्चा करते सुनते वैसा ही चिन्तन होता है।
जिसका चिन्तन होता उसको प्राणी पाता है, खोता है।
जो प्रभु तुमको कभी न छोड़े उस प्रीतम से प्रीति बढ़ाओ। ऐ०।
यह भी ध्यान रहे जीवन में जैसा संग हुआ करता है।
वैसे ही विचार बनते हैं तद्‌वत् ढंग हुआ करता है।
बचते रहो कुसंगत से तुम सदा सुसंगति में ही आवो। ऐ०।
सब कुछ क्षण-क्षण बदल रहा है अपने सत्स्वरूप को जानो ।
नश्वर तन में रहने वाले तुम अविनाशी को पहचानो।
आगे देखो कहीं न ठहरो पथिक सुपथ में बढ़ते जावो। ऐ०।

पद 8

ओ देखने वाले तू अपने ज्ञान को भी देख ले।
उस निज स्वरूप के ज्ञान से अज्ञान को भी देख ले ॥1॥
अपने पतन को भी देख ले उत्थान को भी देख ले।
तू ऐसी दृष्टि प्राप्त कर भगवान को भी देख ले ॥2॥
परमात्मा के ध्यान में जब मन नहीं लगता।
वह है लगा हुआ कहीं उस ध्यान को भी देख ले ॥3॥
सुनते हुए कहते हुए कुछ जानते हुए भी।
तू अपने अहंकार के अभिमान को भी देख ले ॥4॥
जिससे सभी आरम्भ है अरु अन्त है जिसमें सभी।
उस सर्वमय अनन्त शक्तिमान को भी देख ले ॥5॥
नश्वर को सत्य मानना यह है तो अविद्या ही।
विद्वान है तो नित्य विद्यमान को भी देख ले ॥6॥
जो कुछ तुझे मिलता है उसका कोई दाता है।
उसकी दया को और उसके दान को भी देख ले ॥7॥
इस द्वन्दमय जगत में अब सावधान रहकर।
तू पथिक उस महान के सुविधान को भी देख ले ॥8॥

पद 9

कहीं सतसंग का दरबार देखता हूं मैं।
कहीं प्रपंच का विस्तार देखता हूं मैं ॥1 ॥
सुना है सब विभूतियाँ उसी अनंत की हैं।
उन्हीं को सर्व मय साकार देखता हूं मैं ॥2 ॥
सिन्धु में बिन्दु की तरह मैं हूं उनका उनमें।
विमुख होकर ही अहंकार देखता हूं मैं ॥3 ॥
मेरा कुछ भी नहीं अपना उन्हीं का है सब कुछ।
अपने प्रियतम का ही संसार देखता हूं मैं ॥4 ॥
मेरे सर्वस्व यहीं हैं और अब क्या पाये।
अपना तो उन पर ही अधिकार देखता हूं मैं ॥5 ॥
चाहे जब चाहे जहां उनका जो कुछ भी माने।
सदा निज भावानुसार देखता हूं मैं ॥6 ॥
दया उनकी है जब मन चाही पूरी होती है।
कृपा है जबकि तिरस्कार देखता हूं मैं ॥7 ॥
उनकी दी हुई नजर से उन्हें अपने में।
कभी न भूलूँ बार-बार देखता हूं मैं ॥8 ॥
क्या कहूं क्या दिखाके क्या दिखा रहे हैं वो।
पथिक हूं पथ में चमत्कार देखता हूं मैं ॥9 ॥

पद 10

जग में कर्तव्य निष्ठ मानव विरले ही देखे जाते हैं।
विद्वान बहुत हैं पर अपने दोषों को छोड़ न पाते हैं ॥1 ॥
पूंजीपति धन के लोभी हैं निर्धन दानी बनना चाहें।
निर्बल सेवा को तरस रहे बलवान पड़े अलसाते हैं ॥2 ॥
जब सुखी बाँट सकते सुख को वे बने विलासी भोगी हैं।
जो दुखी न कुछ कर सकते हैं वह सुख देने को ललचाते हैं ॥3 ॥
जिनकी प्रवृत्ति से गति होती वह उदासीन बन रूके हुए है।
जिनकी उन्नति निवृत्ति से है वह प्रवृत्ति को अपनाते हैं ॥4 ॥
जग त्यागी जी पैसे वाले जब महल बने सन्यासी के।
अब किससे क्या शिक्षा लें हम जब मौनी जी चिल्लाते हैं ॥5 ॥
कर्तव्य विमुखता के कारण सब उल्टी मति गति हो जाती है।
भीतर की प्रकृति छिपा करके अब आकृति मात्र सजाते हैं ॥6 ॥
जब वैश्या वृद्ध हो चुकी हो तब तप करने निकले घर से।
तश्कर भी शक्ति हीन होने पर साधु वृत्ति दिखलाते हैं ॥7 ॥
जब रोगी हैं तब देव भक्त जब कुछ न रहा मुनि बन बैठे।
भोग से इन्द्रियाँ शिथिल हुईं तब हे भगवान बुलाते हैं ॥8 ॥
चींटी से लेकर ब्रह्मा तक को जो कुछ जग में करना है।
सबकी चर्चा चलती रहती अपना कर्तव्य भुलाते हैं ॥9 ॥
हम श्रोता हैं या वक्ता हैं हम गृहस्थ हैं या संन्यासी।
हैं तभी धर्म के पथ पर जब अपना कर्तव्य निभाते हैं ॥10 ॥
जो कुछ भी हम कर सकते जिसके साधन उपलब्ध हमें।

जो कर्म सर्व हितकारी हों कर्तव्य वही कहलाते हैं ॥11॥
अधिकार मान धन की तृष्णा मानव को पतित बनाती है।
जो पथिक जीत पाते इसको वह मुक्ति मार्ग में आते हैं ॥12॥

पद 11

जहां हमें सत्संग सुलभ है, वहीं हृदय आनन्दित पायें।
गुरु जन की सद्शिक्षा द्वारा, भूल भ्रान्ति अज्ञान मिटायें ॥1॥
जो कुछ अपने सन्मुख आये, जो कुछ भी मिलकर छुट जाये।
वह कुछ अपना नहीं जगत में, तब क्यों उससे मोह बढ़ायें ॥2॥
सुखासक्त ही रागी मोही, दुख के भय वश द्वेषी द्रोही।
मानव शान्ति नहीं पाते हैं चाहे जितनी युक्ति लगायें ॥3॥
जिसे चाहते हैं वह सुख है, नहीं चाहते जिसे वही दुख है।
सुख दुख दाता नहीं दूसरा, आपस में समझे समझाये ॥4॥
जिसको हमने नहीं बनाया, यह सब तन मन जिससे पाया।
उस दाता को कभी न भूलो, पथिक उसे ही ध्यायें गायें ॥5॥

पद 12

जिस शक्तिमान में दोष न हों भगवान् उसे ही कहते है।।
जो परम मधुर ऐश्वर्य निधान महान उसे ही कहते है ॥1॥
दोष हों जिसे दीखते न हों वह मानव आकृति में पशु है।
जो निज में दोष न रहने दे विद्वान उसे ही कहते हैं ॥2॥

निबलों के काम आ सके जो जग में सच्चा बलवान वही।
जब धन की चाह न रह जाये धनवान उसे ही कहते हैं ॥3॥
जो जग में मिले हुए तन धन सब कुछ प्रभु का मान रहा
जो सुन्दर जीवन बना सके श्रीमान उसे ही कहते हैं ॥4॥
जिस सुखासक्ति के कारण ही सारे दोषों का जन्म हुआ।
जो पथिक त्याग कर सके इसे धीमान उसे ही कहते हैं ॥5॥

पद 13

जिस प्रभु का यह संसार वह प्रभु मुझमें ही है॥
यहां जो कुछ भी करूँ कार्य उन्हीं में रहकर।
नित्य मिलता मुझे विश्राम उन्हीं में रहकर।
बीते दिन रात सुबह शाम उन्हीं में रहकर।
जिधर देखूँ करुँ प्रणाम उन्हीं में रहकर।
नित्य चिन्मय अखंड अपार वह प्रभु मुझमें ही है॥1॥
हर एक रूप में हर नाम में हो ध्यान वही।
सर्व में उनकी सत्ता है रहे ध्यान यही।
यही पूजा स्वधर्म और व्रत विधान यही।
मन से वाणी से सदा होता रहे गान यही।
इस जीवन का जिस पर भार वह प्रभु मुझमें ही है ॥2॥
अनेक साधनों का धाम यह तन प्रभु का है।
जहाँ अगणित भरे हैं काम यह तन प्रभु का है।

मुझे जो कुछ मिला है वह सभी धन प्रभु का है।
सर्व का आश्रय मैं हूं यह वचन प्रभु का है।
जिसका सब पर अखंडित प्यार वह प्रभु मुझमें ही है॥3॥
यही मेरा परम आधार इसी में आनन्द।
यहीं मिटता असत व्यवहार इसी में आनन्द।
स्वरूप नित्य निर्विकार इसी में आनन्द।
यहीं होता हूं निर्विकार इसी में आनन्द।
पथिक गाऊँ यही हर बार वह प्रभु मुझमें ही है॥4॥

पद 14

जो है वो भुलाने के काबिल नहीं है।
नहीं है वो पाने के काबिल नहीं है॥1॥
जो है वो अभी है यहीं है हम उसमें।
किसी को दिखाने के काबिल नहीं है॥ जो०॥2॥
हम उसके ही द्वारा ये सब देखते हैं।
वह है बस बताने के काबिल नही है॥ जो०॥3॥
न होते हुए है-सा जो भासता है।
वह विश्वास लाने के काबिल नहीं है॥ जो०॥4॥
जो है वही सत् है वह परमात्मा है।
असत से छिपाने के काबिल नहीं है॥ जो०॥5॥
पथिक तुम जहाँ हो वहीं पर तो वो है।
यह खोज लगाने के काबिल नहीं है ॥ जो०॥6॥

पद 15

तुम हो पथिक साधना पथ में समझ-समझ कर पैर बढ़ाना।
अविनाशी के सम्मुख होकर नश्वर में मत प्रीति फसाना॥
दृढ़ संकल्प और साहस के साथ प्रेम को पूर्ण बनाकर।
आकृति नहीं किन्तु तुम अपनी परम विरागी प्रकृति बनाकर।
शान्त स्वस्थ समता में रहना कभी न अपना लक्ष्य भुलाकर।
पूर्ण तृप्ति सन्तुष्टि मिलेगी अपने में ही प्रभु को पाकर।
आकर योग भूमिका में अब भोग भूमि में लौट न जाना॥1॥
यदि तुम अपना मान किसी को मन में ममता प्यार लिये हो।
और साथ ही शान मान के पद उपाधि अधिकार लिये हो।
भौतिक जीवन रक्षा के हित धन वैभव का भार लिये हो।
भय लालच बस किसी व्यक्ति का अब भी यदि आधार लिये हो।
तब तो तुम बोझिल हो देखो बहुत कठिन है पैर उठाना॥2॥
देखो कितने अविवेकी जन मोह निशा में ही सोते हैं।
दुःखद स्वप्न में गुरु वाक्यों से कोई जागृत भी होते हैं।
ज्ञान वान भी सुखासाक्ति वश जग में मूढ़ बने होते हैं।
आत्म ज्ञान से वंचित रहकर यहाँ व्यर्थ जीवन खोते हैं।
साथ न देगा सदा जगत में जिसे मोह बस अपना माना॥3॥
साधन पथ में लक्ष्य न भूलो यही तुम्हारा मुख्य काम है।
वहीं तुम्हें विश्राम मिलेगा जहाँ तुम्हारा परम धाम है।
परमें नहीं स्वयं में रुकने से मिलता सबको विराम है।
जिसका आना जाना रहता यहां उसी का पथिक नाम है।
बाहर नहीं स्वयं में ही है सबका निश्चित सत्य ठिकाना॥4॥

पद 16

तुम्हारी शान यही वीर बनो बढ़े चलो।
शूरों का काम यही वीर बनो बढ़े चलो॥
रुकने का नाम न लो असमय विश्राम न लो।
सच्चे निष्काम बनो पुण्यों का दाम न लो।
कहते भगवान यही वीर बनो बढ़े चलो ॥1॥
दुःख ले लो दो न कभी सुख दो पर लो न कभी।
गिरो उठो फिर सम्हलो पर निराश हो न कभी।
गति की पहचान यही वीर बनो बढ़े चलो ॥2॥
जो जाये जाने दो जो आये आने दो।
मनको अपने स्वर में रोने दो गाने दो।
गुरु प्रदत्त ज्ञान यही वीर बनो बढ़े चलो ॥3॥
सच्चे त्यागी होकर तुम बड़भागी होकर।
जग से कुछ चाहो मत तुम अनुरागी होकर।
पथिक स्वाभिमान यही वीर बनो बढ़े चलो ॥4॥

पद 17

धन के लोभी ममता छोड़ो दाता प्रभु से नाता जोड़ो।
धन से कल्पित सुख मिलता है शान्ति नहीं मिलती है धन से।
धन तो छिन जाता छुट जाता लोभ नहीं जाता है मन से।
धन से मन्दिर बन जाते हैं मूर्ति प्रतिष्ठित हो जाती है।

धन से प्रेम नहीं मिलता है धन से भक्ति नहीं आती है॥
धन से गीता वेद मिलेंगे धन से ज्ञान नहीं मिलता है।
धन से भोग सुलभ होता है पर भगवान नहीं मिलता है।
चेतो लोभ पाश को तोड़ो धन के लोभी ममता छोड़ो ॥1॥
धन से उपदेशक मिल जाते पर अविवेक नहीं मिट पाता।
धन के बल से सुखासक्ति मानव का मोह नहीं है जाता।
धन देकर शिक्षक रख सकते पर मेधावी बुद्धि न मिलती।
धन है वस्तु प्राप्ति का साधन धन से आत्म विशुद्धि न मिलती।
धन से सुन्दर चित्र सजा लो सदचरित्र धन से न मिलेगा।
दैवी सम्पद हीन धनी का हृदय कमल धन से न खिलेगा।
धन के लोभ पात्र को फोड़ो धन के लोभी ममता छोड़ो ॥2॥
धन से विटामिन्स मिल जाते धन से शक्ति नहीं मिलती है।
धन से ऑक्सीजन मिल जाता धन से सांस नहीं मिलती है।
धन के बल पर सरजन मिलते दिल दिमाग जोड़ देते हैं।
पर धन से अमरत्व न मिलता तन को प्राण छोड़ देते हैं।
धन के बल पर कुलर लगाकर शीतल कर लो भव्य भवन को।
पर धन द्वारा शांत नहीं कर सकते हो सन्तापित मन को।
धन की तृष्णा से मन मोड़ो धन के लोभी ममता छोड़ो ॥3॥
धन के बल पर तीर्थ धाम में मन्दिर में प्रवेश पा सकते।
पर धन की रिश्वत दे करके कोई स्वर्ग नहीं जा सकते॥
धन छुटने के पहले ही तुम पात्र देख दानी बन जावो।
प्रभु की कृपा समझकर भीतर सरल निरभिमानी बन जावो।
धन की इच्छा करते-करते धन के लोभी मर जाते हैं।
किन्तु परम प्रभु के प्रेमी उदार दानी बन तर जाते हैं॥
पथिक कथन का सार निचोड़ो धन के लोभी ममता छोड़ो ॥4॥

पद 18

परम प्रभु की प्रिय शाश्वत आत्माओ!
तुम्हें देख कुछ गीत गाने की मन में॥
जो कुछ भी अभी तक समझा है मैंने, वही सब तुम्हें भी सुनाने की मन में ॥1 ॥
परम तत्वदर्शी जगत को ही प्रभुमय, प्रभु को जगतमय सतत देखते हैं।
इसी भाव से सर्व रूपों में अपने सर्वस्व प्रभु को ही पाने की मन में ॥2 ॥
मुझे देखकर कोई धोखा न खाना, नहीं दे सकूँगा मैं वरदान कोई।
कदाचित, तुम्हें जो भी कुछ मिल चुका है, वह छिन जायेगा यह बताने की मन में ॥3 ॥
तुम्हारा वही है जो तुमसे न छूटे, कभी भी कहीं भी जो तुमको न छोड़े।
उसे खोजना मत पहिचान लेना, न रखना कहीं आने जाने की मन में ॥4 ॥
बहुत सुन चुके हो हमारी भी सुन लो।
कभी आयेगा जो अभी उसको देखो॥
जो कुछ मुझ पथिक को दिखाया गया है,
वही सब तुम्हें भी दिखाने की मन में ॥5 ॥

पद 19

प्रेम से मेरे प्रभु नारायण कहना है।
जाही विधि राखें प्रभु ताही विधि रहना है॥
तन मन धन कुछ अपना न मान कर।
जो भी आये जाये सब प्रभु का ही जानकर।
मन की प्रतिकूलता को धैर्य से ही सहना।
जाही विधि राखे प्रभुता ही विधि रहना है ॥1 ॥
बन्धनों दुःखों की जड़ आत्म अज्ञान है।
आत्म ज्ञान होता जब स्वयं में ही ध्यान है।
ध्यानी को धन मान भोग नहीं चाहना है।
जाही विधि राखे प्रभुता ही विधि रहना है ॥2 ॥
चाह के त्याग में प्रेम ही समर्थ है।
चाह की पूर्ति का लोभ ही अनर्थ है।
जीवन प्रवाह है प्रेम में ही बहना है।
जाही विधि राखे प्रभुता ही विधि रहना है ॥3 ॥
प्रेम में सेवा की त्याग की शक्ति है।
प्रेम में परमगति मिलती प्रभु भक्ति है।
प्रेम में पथिक नित्य समता को गहना है।
जाही विधि राखे प्रभुता ही विधि रहना है ॥4 ॥

पद 20

प्रेमियों अब कदम बढ़ावो तो,
इधर भी करके कुछ दिखावो तो।
बहुत दिन भोग का सुख भोग चुके,

इधर से दृष्टि अब घुमावो तो।
देख लो कितने शक्तिहीन हुए अभी समय है चेत जावो तो।
सुखों के अन्त में दुःख ही मिलता
तुम भी समझोगे इधर आवो तो।
कितना जीवन बिता चुके जग में,
अभी तक क्या मिला बतावो तो।
सबकी सुनते हो हमारी भी सुनो,
परदा अभिमान का हटावो तो।
हम अभी शान्ति दिखा देंगे तुम्हें,
राग के त्याग को अपनावो तो।
शक्ति है साथ तुम्हारे लेकिन,
अपना मन अपने पास लावो तो।
कृपा प्रभु की न तुम्हें छोड़ेगी,
पथिक संकल्प दृढ़ बनावो तो।

पद 21

भजलो श्री भगवान जगत में, कुछ दिन के मेहमान।
तज दे तू अभिमान जगत में, कुछ दिन के मेहमान॥
रहे न रावण सम अभिमानी, हिरणाकस्यप से वरदानी।
छण में छूटे प्राण जगत में कुछ दिन के मेहमान॥1॥
आये अर्जुन सम धनुधारी धर्मराज सम धर्माचारी।
दानी कर्ण समान जगत में कुछ दिन के मेहमान॥2॥
युग-युग की सब बात पुरानी कलियुग की भी बहुत कहानी।

कवि कर गये बखान जगत में कुछ दिन के मेहमान॥3॥
कहां विक्रमादित्य यहाँ है कालिदास अरु भोज कहाँ हैं।
वह कारुँ लुकमान जगत में कुछ दिन के मेहमान॥4॥
सुनीं सिकन्दर दारा की कृति, सुनी वीर बल की सुन्दरि मति
अकबर से सुल्तान जगत में कुछ दिन के मेहमान॥5॥
अब न कहेंगे आँखों देखी समझ रहे हैं सबकी शेखी।
बल वैभव की खान जगत में कुछ दिन के मेहमान॥6॥
दुखी जनों का दुःख न रहेगा, सुखी जनों का सुख न रहेगा।
सत है आतम ज्ञान जगत में कुछ दिन के मेहमान॥7॥
जगदीश्वर का नाम रहेगा वही परम सुख धाम रहेगा।
निज में लो पहचान जगत में कुछ दिन के मेहमान 18॥
वह परमेश्वर घट-घट वासी परमानन्दरूप अविनाशी।
पथिक न भूलो ध्यान जगत में कुछ दिन के मेहमान॥9॥

पद 22

भूल न जाऊँ तुम्हें कहीं यह बिनती बारम्बार।
कभी न होता बन्द किसी के लिए तुम्हारा द्वार॥
हम सोये थे स्वप्न जगत में अपनी सुध-बुध खोकर।
हँस हँस करते सुख का स्वागत और दुःखों को रोकर॥
सार्थक श्रम से कर न सके सत सेवा कभी स्वजन की।
करते रुचि की पूर्ति रहे नित मौज मनाते मन की॥
अब समझ सके यह सत्य नहीं जो दिखता संसार॥1॥

मोह नींद से जगा हमें कर्तव्य मार्ग दिखलाया।
जो भव बन्धन का कारण है भली भाँति समझाया।
सत परमार्थ सुपथ में चलने का उत्साह बढ़ाया।
कितनी बार सम्हाला हमको गिरते हुए बचाया॥
प्रगटे तमसाछन्न बुद्धि में ज्ञान रूप साकार ॥2 ॥
बुद्धि योग तुमसे न मिला हम पथ में भटक रहे थे।
हमें साध्य का ज्ञान न था साधन में अटक रहे थे।
भोग योग के मध्य प्रलोभन रज्जु में लटक रहे थे।
असफलता के व्यंग वाक्य कानों में खटक रहे थे।
तब तुमने समता की मति दी किया शक्ति संचार ॥3 ॥
तीर्थ गये पर सन्तों का सतसंग नहीं मिल पाया।
गंगा जल में तन धोने से मिटी न ममता माया॥
ज्ञान भक्ति वैराग्य हृदय में जब तक नहीं समाया।
तब तक जो कुछ किया व्यर्थ श्रम कुछ भी हाथ न आया॥
भ्रमित पथिक के लिए सुलभ है एक नाम आधार ॥4 ॥
भूल न जाऊँ तुम्हें कहीं यह बिनती बारम्बार॥

पद 23

भूलने वालो अहंकार भूलना सीखो
दुःख देते हैं दुर्विकार भूलना सीखो ॥1 ॥
कभी किसी ने यदि किया है तुम्हारा अपमान।
भाग्य बस हो गई है हार भूलना सीखो ॥2 ॥

छूट जायेंगे सभी जिनको तुम कहते अपना।
सदा रहते न जो आधार भूलना सीखो ॥3 ॥
बसा लिया है तुमने जिनको हृदय मन्दिर में।
पंचभूतों के वे आकार भूलना सीखो ॥4 ॥
बन गई है कहीं निष्काम किसी की सेवा।
उसका जो कुछ हो पुरस्कार भूलना सीखो ॥5 ॥
कितना सुन्दर है सत सवरूप को पहचानो तो।
यह झूठी देह का श्रृंगार भूलना सीखो ॥6 ॥
भूलते आये हो परमार्थ की बातें अब तक।
जगत में स्वार्थ का व्यवहार भूलना सीखो ॥7 ॥
याद रक्खो सदा उस सत्य को जिसमें रहते।
पथिक असत को बार-बार भूलना सीखो ॥8 ॥

पद 24

मन लेते रहो जिस तरह भी हो प्रभु का पावन नाम।
कह लो नारायण वासुदेव कुछ क्षण ही या अविराम ॥1 ॥
अच्युता नन्द गोबिन्द जपो सब रोग नष्ट होंगे।
पुरुषोत्तम विष्णु जनार्दन जप लो दूर कष्ट होंगे।
हरि नाम भूल जाये समझो उस समय विधाता वाम ॥2 ॥
इसलिए नाम लो प्रभु का वह सर्वस्व तुम्हारा है।
जो कुछ भी मिला तुम्हें अब तक प्रभु का ही सारा है।
प्रभु क्षण भी दूर नहीं होता संग रहता आठों याम ॥3 ॥

इसलिए नाम लो प्रभु का वह सब कुछ का दाता है।
जो लेता कभी हिसाब नहीं देता ही जाता है।
प्रार्थी नाम लेकर अपने सभी बनाते काम ॥4॥
इसलिये नाम लो प्रभु अन्तरयामी अविनाशी है।
उससे है कुछ भी छिपा नहीं सब घट-घट वासी हैं।
जब दिव्य दृष्टि खुल जाती दिखते जगमय प्रभु सुखधाम ॥5॥
नाम की सही महिमा इस युग के सन्त सुनाते हैं।
अब भी दीनों दुखियों से गुरुवर नाम जपाते हैं। हम पथिक नाम का आश्रय लेकर पाते हैं विश्राम ॥6॥

पद 25

मानव सोचो जग के सुख का विस्तार रहेगा कितने दिन।
सत्कार रहेगा कितने दिन यह प्यार रहेगा कितने दिन ॥1॥
चाहे पितु हो या माता हो पत्नी हो सुत या भ्राता हो।
जिसको अपना कहते उस पर अधिकार रहेगा कितने दिन ॥2॥
कोई आता कोई जाता सबसे थोड़े दिन का नाता।
जिसका भी आश्रय लेते वह अधिकार रहेगा कितने दिन ॥3॥
जो जग में सच्चे ग्यानी हैं परमार्थ तत्त्व के ध्यानी हैं।
उनसे पूछो मनका माना संसार रहेगा कितने दिन ॥4॥
तुम प्रेम करो अविनाशी से मिल जावो सब उर वासी से।
ऐ पथिक यहाँ मैं मेरा का व्यापार रहेगा कितने दिन ॥5॥

पद 26

जीवन की सफलता है प्रभु प्रेम के पाने में।
सतसंग सहायक है प्रज्ञा के जगाने में॥
यह तन तो साधनों का है धाम मिला सबको।
अब देर न हो साधन को शुद्ध बनाने में ॥1॥
साधन को साधे रहने से सिद्धि मिला करती।
साधन न साध पाना ही हेतु गिराने में ॥2॥
हम सबकी सुनते आये प्रभु की नहीं सुनते हैं।
सुख मानते हैं अपनी ही सबको सुनाने में ॥3॥
भगवान के मिलने में दूरी है न देरी है।
देरी है मोह माया अभिमान मिटाने में ॥4॥
प्रभु नित्य प्राप्त ही है सदगुरु ने बताया है।
हम पथिक स्वयं खोये हैं खोज लगाने में ॥5॥

पद 27

मानव प्रभु के गुण गाते न क्यों न तुम।
सतकी शरण में अब आते न क्यों तुम॥
जिनको तुम अपना समझे हो सदा काम यह आ न सकेंगे।
गुरु विवेक बिनभव-बँधन से कोई तुम्हें छुड़ा न सकेंगे।
मन का मोह मिटाते न क्यों तुम, मानव प्रभु के गुण गाते न क्यों तुम ॥1॥

जैसा भी चिन्तन होता है चित्त उसी मय बन जाता है।
जिसकी चाह प्रबल होती है प्राणी उसको ही पाता है।
सत्य से प्रेम बढ़ाते न क्यों तुम, मानव प्रभु के गुण गाते न क्यों तुम ॥2 ॥

जिसकी सत्ता में सब प्राणी, इच्छित सुख पाते रहते हैं।
जिसकी याद दिलाने के हित, अगणित दुःख आते रहते हैं।
दुःख से लाभ उठाते न क्यों तुम मानव प्रभु के गुण गाते न क्यों तुम ॥3 ॥

काम क्रोध मद अहंकार से जिसका हृदय नहीं जलता है।
भोगी बनकर कौन जगत में अपने हाथ नहीं मलता है।
पथिक त्याग अपनाते न क्यों तुम मानव प्रभु के गुण गाते न क्यों तुम ॥4 ॥

पद 28

मिलता है बड़े भाग्य से सतसंग समागम ॥
सतसंग के बिना कहीं होता नहीं है ज्ञान।
यदि ज्ञान न हो सत्य का रहता नहीं है ध्यान।
विन ध्यान के मिलते नहीं हैं प्रेम मय भगवान।
भगवान बिना जीव का होता नहीं कल्यान।
सतसंग के सुयोग से मिटता है मोह तम ॥1 ॥ मिलता० ॥
सतसंग के बिना किसी की गति नहीं होती।
जिससे कि पुन्य प्राप्त हों सन्मति नहीं होती।
पापों से जो बचाती वो सुकृति नहीं होती।

उद्वेग को दबाती जो वह धृति नहीं होती।
इसके बिना होता नहीं है शक्ति का संयम ॥2 ॥
सतसंग से ही ध्रुव ने पाया अटल धाम।
प्रहलाद ने इससे ही दिखाया था कहाँ राम।
सतसंग से ही पांडवों के दुःख मिटे तमाम।
सतसंग से बन जाते हैं बिगड़े हुए सब काम।
सतसंग से सुधर गए लाखों यहां अधम ॥3 ॥ मिलता० ॥
इसके बिना कितने ही शक्ति खो रहे।
इस मोह मयी नींद में लाखों हैं सो रहे।
जो थे मलिन वह इससे ही निज मल को धो रहे।
मिलता है पथिक को यहीं पे शान्ति मनोरम ॥4 ॥

पद 29

मुश्किलें होती हैं आसान बड़ी मुश्किल से।
समझ में आता है अज्ञान बड़ी मुश्किल से ॥
दुनियाबी ज्ञान के गरुर में सब भूले हैं।
कोई होता है निरभिमान बड़ी मुश्किल से।
जहां इन्सान में हैवानियत छिपी रहती।
देख पाते कोई विद्वान बड़ी मुश्किल से।
कभी ईश्वरीय विधान गलत करता नहीं।
मगर होता है दूर इत्मीनान बड़ी मुश्किल से।
जो कि बलवान रूपवान झूठा वान बना।

उसे होना है आत्मवान बड़ी मुश्किल से॥
किसी की आत्मा परमात्मा से भिन्न नहीं।
ज्ञानी पर पाते हैं पहचान बड़ी मुश्किल से॥
किसी भी साधना में चित्त शुद्ध होने पर।
सुलभ हो जाते हैं भगवान बड़ी मुश्किल से॥
सारे बन्धन अशांति दुःख अहंकार में हैं।
मुक्त होता कोई महान बड़ी मुश्किल से॥
गलत कर्मों से ही हम मुश्किलों में पड़ते हैं।
सही कर्मों का होता ज्ञान बड़ी मुश्किल से॥
सत्य सर्वत्र सर्वमय उसी में है संसार
पथिक में रहता यही ध्यान बड़ी मुश्किल से॥

पद 30

मैंने देखा है दृष्टि पसार किसी का कोई नहीं।
जहां तक भी है यह संसार किसी का कोई नहीं ॥1॥
अनेकों जन्म ले कितने यहां माता-पिता देखे।
पता भी है नहीं जिनका बहुत संगी सखा देखे।
बृहद धन-धान्य वैभव भोग के शुभभाग्य पा देखे।
यहां अपनी प्रशंसा के बहुत कुछ गीत गा देखे।
यही कहना पड़ा हर बार किसी का कोई नहीं ॥2॥
यहां पर हर किसी को नेह नाता जोड़ते देखा।
जिसे पकड़ा उसी को निठुर तासे छोड़ते देखा।

जहां मन की न हो पाई नहीं मुख मोड़ते देखा।
उन्हीं को रुँठते लड़ते प्रीति को तोड़ते देखा।
तभी मैंने लगाई पुकार किसी का कोई नहीं ॥3॥
प्रेमी और प्रेमिका प्रेम का जो गान करते हैं।
परस्पर दीखता ऐसा कि सरबस दान करते हैं।
किन्तु सुख मानते जिसमें उसी का मान करते हैं।
अनेकों दुःख सहकर स्वार्थ का ही ध्यान करते हैं।
बता देता है सीमित प्यार किसी का कोई नहीं ॥4॥
जहाँ सब दुःख मिट जाते वही सच्चा ठिकाना है।
वहाँ पर पहुंच करके इस जगत में फिर न आना है।
यहाँ कुछ भी न अपना मान कर ही मुक्ति पाना है।
अहंता स्वार्थ परता मोह ममता को मिटाना है।
पथिक यह ज्ञानियों का विचार किसी का कोई नहीं ॥5॥

पद 31

मैं हूं पथिक सखे तुम मुझसे समझबूझ कर प्रीति बढ़ाना।
फिर मत कहना आगे चलकर मैंने तुम्हें नहीं पहचाना॥
यदि तुम मेरे सच्चे साथी हो तो इस सत पथ में आवो।
आकृति नहीं किन्तु तुम अपनी परम बिरागी प्रकृति बनावो।
हो कुछ भी निज भाग्य परिस्थिति कभी न अपना लक्ष्य भुलावो।
ऐसा न हो कहीं कुछ लालच बस तुम पीछे ही रह जावो।
याद रहे अति दुस्तर होगा मुझे छोड़ करके फिर पाना॥1॥

यदि तुम अपने मन में कुछ दुनियावी ममता भार लिये हो।
और साथ ही मान शान के पद उपाधि अधिकार लिये हो।
भौतिक जीवन रक्षा के हित धन वैभव का भार लिये हो।
सत्य बिमुख क्षणभंगुर सुख के ही यदि तुम आधार लिये हो।
तब तो मेरे संग में तुमको बहुत कठिन है पैर बढ़ाना ॥2 ॥
कितने प्रेमी मिले छुट गए आगे भी छुट जायेंगे।
रुकने वाले बढ़े हुओं को देख-देख पछतायेंगे।
इस पथ में चंचल चितवाले जहँ-तहँ ठोकर खायेंगे।
जो कि तपस्वी त्यागी हैं वह सत्वर परम शान्ति पायेगें।
प्रेमी का कर्तव्य यही है कहीं न रुकना चलते जाना ॥3 ॥
चलते हुए चतुर दिक् अपने किसी किसी को सोते देखूँ।
कभी किसी को दुखद स्वप्न में भय बस जागृत होते देखूँ।
सुख के कारण ही इस जग में बद्ध जीव को रोते देखूँ।
सत्य ज्ञान से वंचित रहकर सबको जीवन खोते देखूँ।
सोचो कब तक साथ रहेगा जिसको तुमने अपना माना ॥4 ॥
प्रभु के पथ पर चलते रहना मेरा तो बस यही काम है।
जहाँ किया विश्राम कहीं पर कहने भर को वहीं धाम है।
जीवन के दिन बीत रहे हैं नित्य प्रात अरु नित्य शाम है।
ठहर न सकता एक जगह पर इसीलिए तो पथिक नाम है।
इस अनंत पथ में मेरा कोई निश्चित नहीं ठिकाना ॥5 ॥

पद 32

यह जग है इसमें कौन तुम्हारा जान सको तो जान लो।
जो तुम्हें न तजता कभी उसी प्रेमास्पद को पहचान लो ॥
जो कुछ दोगे वह कई गुना बढ़कर मिलता ही जायेगा।
दुःख दो न किसी को सुख ही दो, पर-हित का ही व्रत ठान लो।
कोई दूसरा करे न करे पर नेकी करते जावो।
पकड़ो न किसी के दोष कभी सबके गुण ही छान लो ॥
यदि दुःख से बचना चाहो तो अभिमान लोभ ममता छोड़ो
जो कुछ देना हे वह दे दो कुछ भी न किसी से दान लो ॥
जो कुछ भी तुमको मिला हुआ हे उसका सत उपयोग करो।
आगे भी मिलता जायेगा बिस्वास करो गुरु ज्ञान लो।
जो वस्तु मानते हो अपनी वह नहीं साथ में जायेगी।
तुम पथिक एक परमेश्वर को ही अपना आश्रय मान लो ॥

पद 33

वे धन्य हैं श्रीमान् जो भगवान की सुनते हैं।
वे बड़े भाग्यवान् जो भगवान की सुनते हैं॥1 ॥
भगवान की सुनकर जो ज्ञानी बन रहे हैं।
जो त्यागी तपस्वी योगी ध्यानी बन रहे है।।
जो भक्त बिरागी धर्मी दानी बन रहे हैं।

जो है नहीं होने के अभिमानी बन रहे हैं।
उनको ही होता ज्ञान जो भगवान की सुनते हैं॥2॥
जब तक कि इन्द्रियों से विषियों का भोग होता।
भोगी के तन में मन में अनचाहे रोग होता।
संयोग जिसका होता उसका वियोग होता।
जो नित्य निरंतर है उसका ही योग होता।
उनको ही सुलभ ध्यान जो भगवान की सुनते हैं॥3॥
वह जीव जन्मते ही परिवार की सुनता है।
कुछ प्यार की सुनता है तिरस्कार की सुनता है।
अभिमानी बनके अपने ही अधिकार की सुनता है।
भगवान से विमुख हो संसार की सुनता है।
सन्मुख वही विद्वान जो भगवान की सुनता है॥4॥
भगवान की जो सुनते वो पाप से बच जाते निर्द्वन्द रहते जग सन्ताप से बच जा
वह व्यर्थ के प्रलाप से बिलाप से बच जाते।
वह प्रेम से भरे हुए अभिशाप से बच जाते।
वह पथिक सावधान जो भगवान की सुनते हैं॥5॥

पद 34

सज्जनों परमेश्वर का सुमिरन बारम्बार कर लो।
कभी कुछ बिगड़ा है तो उसका अभी सुधार कर लो॥
जिसको तुम अपना कहते उसके साथ सदा न रहोगे।
जहां सुखमान रहे हो वहीं अन्त में दुःख सहोगे।
अभी अवसर है यदि सत संगति से गुरु ग्यान गहोगे।
मुक्ति मिल जायेगी जब तुम इस जग से कुछ न चहोगे।
मृत्यु आने के पहले जीवन का उद्धार कर लो॥1॥
बचाओगे जो कुछ तुम वह तुम से छिन जायेगा ही।
जिसने जो कुछ दे रक्खा है वह जीवन में पायेगा ही
अरे तुम चिन्ता छोड़ो भाग्य लिखा वो आयेगा ही।
कहीं सुख के पीछे जो होगा पाप रुलायेगा ही।
सदा कुछ भी न रहेगा कितना ही विस्तार कर लो॥2॥
अनेकों पछताते हैं जीवन के अच्छे दिन खोकर।
अनेकों भोग रहे हैं दुष्कर्मों के फल रो रोकर।
अनेकों पशुवत जीते औरों का बोझा ढो ढोकर।
कहीं बिरले ही मानव रहते हैं स्वाधीन होकर।
तुम्हें जो कुछ करना है उसका अभी विचार कर लो॥3॥
भक्त होना हैं तो प्रभु को ही अपना मान लेना।
मोह ममता तजकर बस सेवा का व्रत ठान लेना।
त्याग करना है सारे दोषों को पहचान लेना।
असत से असंग रहकर सत स्वरूप को जान लेना।
पथिक अपने ही में निज प्रियतम को स्वीकार कर लो॥4॥

पद 35

समझते जिसको हमारा इक दिन कोई न होगा
दो हृदय जो प्राण हमारा इक दिन कोई न होगा ॥1 ॥
आज जिनके गर्व में तुम फूलकर इतरा रहे हो।
खींच लेंगे सब किनारा इक दिन कोई न होगा ॥2 ॥
दिख रहे जो आज तेरे हृदय तन धन सहित अपने।
बने जो आंखों के तारा इक दिन कोई न होगा ॥3 ॥
अभी ही जीवन डगर में किस तरह मिल कौन भूले।
तभी विस्मित हो पुकारा इक दिन कोई न होगा ॥4 ॥
कौन ऐसा संग है जिसमें कि परिवर्तन न हो।
पथिक उस प्रभु बिन तुम्हारा इक दिन कोई न होगा ॥5 ॥

पद 36

सभी सन्त गुरुजन जो समझा रहे हैं।
ऐ चर्चा भुलना महा मूढ़ता है॥
बड़े भाग्य से ऐसा अवसर मिला है निरर्थक बिताना महा मूढ़ता है॥1 ॥
समझ लो ये परिवार कब तक रहेगा किसी का सुखद प्या
कब तक रहेग
जो माना है अधिकार कब तक रहेगा, नहीं समझ पाना महा मूढ़
है॥2
बहुत शीघ्र ही अपना उद्धार कर लो, जो कुछ कर सको पर उपका

कर लो।
ये अज्ञान की सीमा को पार कर लो देरी लगा महा मूढ़ता है॥3 ॥
जहाँ रह रहे हो निकलना पड़ेगा।
नहीं चाहने पर भी चलना पड़ेगा।
जिसे खोके फिर हाथ मलना पड़ेगा।
वहां मन फंसना महा मूढ़ता है॥4 ॥
सदा शान्ति रहती है समता के पीछे।
समता न आती विषमता के पीछे।
विषमता रहा करती ममता के पीछे।
ममता बढ़ाना महा मूढ़ता है॥5 ॥
कहीं मुग्ध होकर के तन में न अटको।
कहीं लोभी बनकर धन में न अटको।
अचल में रहो चंचल मन में न अटको।
पथिक अटक जाना महा मूढ़ता है॥6 ॥

पद 37

साथियों अब कदम बढ़ाना है।
इधर सतकर्म कर दिखाना है॥1 ॥
अभी तक कितने शक्तिहीन हुए।
भोग से शक्ति को बचाना है॥2 ॥ इधर॰ ॥
सुखों के अन्त में दुःख ही मिलता है।
त्याग अनुराग को बढ़ाना है॥3 ॥ इधर॰ ॥

अब तो लेनी है ज्ञान गुरु की शरण।
असत से परमार्थ पथ में आना है॥4 ॥ इधर० ॥
दु:ख मिट जायेंगे यदि दोष मिटे।
भाव से प्रेम गीत गाना है॥5 ॥ इधर० ॥
सत्य आनन्द तुमसे दूर नहीं।
असत के संग को हटाना है॥6 ॥ इधर० ॥
कृपा प्रभु की हमेशा नित्य हमारे साथ में है।
पथिक विश्वास उर में लाना है॥7 ॥ इधर० ॥

पद 38

साथी सावधान हो जाना।
जग में जो दिख रहे सहारे, तन-धन-जन हैं नश्वर सारे।
जो मिलते वे छुट जाते हैं, इनमें अपना मन न फँसाना॥
सुखासक्ति दोषों की माता, सकल दोष ही हैं दुखदाता।
दोष त्याग के लिए सजग हो, मन से अनासक्ति न भुलाना॥
नाम रूप प्रभु की माया है, अहंकार उसकी छायां है।
माया छाया जिसके आश्रित, उसे प्रेम में ही है पाना॥
सब जीवों का दाता प्रभु है, सकल सृष्टि निर्माता प्रभु है।
प्रभु का जो कुछ सुलभ तुम्हें है, उसको सर्व हितार्थ लगाना॥
जो दिखता वह सत्य नहीं है, जो कि देखता सत्य वही है।
पथिक वही विश्राम पा सका जिसने दृष्टा को पहचाना॥

पद 39

ाधु साधना न भूलना। इसकी सिद्धी प्रेम को पाना॥1॥
ाम क्रोध से शक्ति बचाना सब इन्द्रियों को बस में लाना।
क्षणिक सुखों में मन न फँसाना॥ साधु० ॥2 ॥
ान्धे की लाठी बन जाना, भटके जन को मार्ग बताना।
दीन अनाथों को अपनाना॥ साधु० ॥3 ॥
ु:खी जनों का कष्ट हटाना, कंटक चुनकर फूल बिछाना।
अन्धकार में ज्योति जलाना॥ साधु० ॥4 ॥
भूखे जन की क्षुधा मिटाना, प्यासे की तुम प्यास बुझाना।
रोगी की औषधि पहुंचाना॥ साधु० ॥5 ॥
गिरे हुए को तुरंत उठाना, शोक विकल को गले लगाना।
रोते को भी धैर्य बंधाना॥ साधु० ॥6 ॥
निर्धन को कुछ धन दे आना निर्बल को बलवान बनाना।
कहना मत करके दिखलाना॥ साधु० ॥7 ॥
पर धन में न कभी ललचाना, जगत दृश्य से विरति बढ़ाना।
कर्मवीर जग में कहलाना॥ साधु० ॥8 ॥
वैभव में न कभी इतराना, असफलता में चित्त न डिगाना।
पथिक सभी विधि नियम निभाना॥ साधु० ॥9 ॥
साधक

पद 40

सुनो श्रोता प्यारे सज्जन, सुना हमने यह गुरु प्रवचन।
ग्यान में जो साधक जागे विषय सुख को विषवत त्यागे।
देखता रहे साक्षी बन जो कुछ भी होता हो आगे।
नहीं वह बंधता कर्ता बन सुना हमने यह गुरु प्रवचन॥1॥
ज्ञान में पाप मिटा करते, सभी संताप मिटा करते।
कष्ट जो कुछ आते हें वो सब अपने आप मिटा करते।
प्रेम ही होता जीवन धन, सुना हमने यह गुरु प्रवचन॥2॥
साधकर जो बानी बोले बुद्धि साधे अन्तर तोले।
साधकर काम क्रोध के बेग, भेद अपना न कहीं खोले।
साध लेना बहु चंचल मन, सुना हमने यह गुरु प्रवचन॥3॥
मन से जो कुछ माना जाता, बुद्धि से वह जाना जाता।
स्वयं में शान्त मौन होकर आत्मा पहचाना जाता।
पथिक मिल जाता आनन्द घन, सुना हमने यह गुरु प्रवचन॥

पद 41

हम पथिक हमारा और ढंग मेरा औरों का कौन संग।
मैं किसे बताऊँ राह कौन, मेरे दिल की है चाह कौन।
समझेगा मेरी आह कौन, करता किसकी परवाह कौन॥
अपनी-अपनी बज रही चंग, हम पथिक हमारा और ढंग।

है वैभव सुख की शान कहीं, है जाति देश अभिमान कहीं।
है मत समाज का गान कहीं, स्वारथयुत धर्म विधान कहीं।
सुन सुन के हम हो गए तङ्ग, हम पथिक हमारा और ढंग।
कोई कुछ ज्ञान सिखाते हैं, कितनी विधि ध्यान बताते हैं।
पर हम जो रोते गाते हैं, यह बिरले ही लख पाते हैं॥
सुन देख हो गए सभी दंग, हम पथिक हमारा और ढंग॥
हम चलना खा ठोकर सीखे, दिल पाना दिल खोकर सीखे।
जो कुछ हँसकर रोकर सीखे, सच्चे आसिक होकर सीखे।
हो गया निराला राग रंग, हम पथिक हमारा और ढंग॥
हम जंगल में हैं या घर में, दिल लगा एक उस दिलबर में
वो मेरे बाहर भीतर में व्यापक हर शै में हर दम में।
बस रही मिलन की ही उमंग, हम पथिक हमारा और ढंग॥
हम भला बुरा क्या पहचाने हम तो प्रीतम के दीवाने।
बस एक उन्हीं को ही जाने हमको कोई कुछ भी माने।
चल पड़े जिधर मन की तरंग, हम पथिक हमारा और ढंग॥

पद 42

हे प्रभु अनेक रूपों में आ करके चले गए, मैंने अभी जी भर के देखा नहीं है
सो रहे थे हमको जगा करके चले गए मैंने अभी जी भरके देखा नहीं है।
भूल गए उनको जब हम इस संसार में, अपने को खो बैठे किसी के प्यार में।

असत को सत मान लिया हम अविचार में, साधन दिखता नहीं था
मोह अंधकार में।
वही हमें सब कुछ बता करके चले गये, मैंने अभी जी भरके देखा
नहीं है।

पद 43

जहाँ बने भोगी वहीं शक्ति हीन हुए,
जिसमें सुख माना था उसी के अधीन हुए।
जितना अभिमान बढ़ा उतने ही दीन हुए,
जब निराश होकर हम दुःखी उदासीन हुए।
दुःखहारी दुःख को मिटा करके चले गए,
मैंने अभी जी भरके देखा नहीं ॥3 ॥
दया हुई तब अपूर्व प्यार मिला मान मिला,
कृपा हुई तभी हमें प्रभु से ही ज्ञान मिला।
शुभ सुन्दर जो भी मिला प्रभु से ही दान मिला,
जितना जनाया बस उतना ही ज्ञान मिला।
जो न कभी देखा था दिखा करके चले गये,
मैंने अभी जी भरके देखा नहीं ॥4 ॥
भूल से हम समझे थे सभी कुछ हमारा है,
अब सब दीख रहा प्रभु का पसारा है।
अहंकार को तो अभिमान सदा प्यारा है,
इसे त्याग पाऊँ बस उन्हीं का सहारा है।
पथ में जहाँ फिसले हमें उठा करके चले गये,
मैंने अभी जी भरके देखा नहीं ॥5 ॥
यह मन का भ्रम उनका आना जाना कैसा,

जिसमें हम जो हममें खोज लगाना कैसा।
जो अप्राप्त है ही नहीं उसका पाना कैसा,
जो कि जानते सब कुछ उन्हें सुनाना कैसा।
पथिक में ही अपने को लखा करके चले गये,
मैंने अभी जी भरके देखा नहीं ॥6 ॥

पद 44

हृदय में ही अपने भगवान, न भूलो मन तुम बन अनजान।
आज जिसे तुम खोज रहे हो अपना खोकर ज्ञान।
उसको अपने ही में ही देखो तज माया अभिमान ॥1 ॥
जो चित्त शक्ति स्वरूप प्रेममय करो उसी का ध्यान।
यह तन मन प्राणों के जीवन अच्युत परमस्थान ॥2 ॥
नभ जल थल में जीव मात्र के पोषक एक समान।
शान्तिद सर्व सुखों के सागर अनुपम ज्ञान निधान ॥3 ॥
जो सर्वज्ञ परम श्रद्धास्पद सर्वाधार महान।
वह चित्त शक्ति स्वरूप तुम्हारा पथिक उसे पहचान ॥4 ॥

पद 45

ज्ञान में यह जागरण का समय है सोते न रहना।
सुखद स्वप्नों में न हँसना दुःखद रोते न रहना।
मन विषय विषसे सना है निर्विषय इसको बनावो।

प्रेम में ही तुम सदा आनन्द के ही गीत गावो।
कामना वस कर्म के अब बीज तुम बोते न रहना ॥1 ॥
शान्ति शाश्वत प्राप्त ही है अहंकार अशान्त रहता।
सत्य से दूरी नहीं हे मन बिमुख हो भ्रान्त रहता।
क्षणिक सुख के लिए अब जीवन व्यर्थ खोते न रहना ॥2 ॥
तुम सदा ही मुक्त हो यदि अब कभी मन की न मानो।
रहो जग में मोह तजकर सभी प्रभु की वस्तु जानो।
व्यर्थ तन के संग से अब भिखारी होते न रहना ॥3 ॥
तीन गुण के साथ ही जग में प्रकृति कुछ कर रही है।
तत्त्व के आश्रित निरंतर रूप अगणित धर रही है।
पथिक कर्तापने का अब भार तुम ढोते न रहना ॥4 ॥

पद 46

ज्ञान में जब दिखा देते हो तुम।
बात बिगड़ी बना देते हो तुम ॥1 ॥
जिसे हम दूर नहीं कर पाते।
दोष मेरा हटा देते हो तुम ॥2 ॥
मिले बिना तुमसे जो कभी बुझती नहीं।
प्यास ऐसी बुझा देते हो तुम ॥3 ॥
गरूर अपने आप झुक जाता।
चोट ऐसी लगा देते हो तुम ॥4 ॥
मेरी यह बन्द आँखें खुल जाती।

रोशनी जगमगा देते हो तुम ॥5 ॥
हम तो भूले स्वयं तुमको भी।
याद अपनी दिला देते हो तुम ॥6 ॥
पथिक गिरते हुए संभल जाता।
मन्त्र ऐसा सुना देते हो तुम ॥7 ॥

पद 47

॥कीर्तन॥

अधम उधारन मेरे श्याम सुध लेते रहना।
भूल न जाना लीला धाम सुध लेते रहना ॥1 ॥
नाथ तुम्हारी यदि दया है भुला न सकती फिर माया है।
हो जाऊँ निर्भय सब ठाम सुध लेते रहना ॥2 ॥
परम प्रेममय अन्तरयामी अकथ अनोखे सबके स्वामी।
मेरे जीवन धन अभिराम सुध लेते रहना ॥3 ॥
जब अपना मन निश्छल होगा जहाँ प्रेम का कुछ बल होगा
मिलते तभी तुम बिना दाम सुध लेते रहना ॥4 ॥
पथिक आचुका शरण तुम्हारी यही विनय है भव भय हारी
देना भक्ति इसे निष्काम सुध लेते रहना ॥5 ॥

सन्त वचन

श्रद्धा परमात्मा की सर्वोपरि दिव्य शक्ति है। प्राणी की अभिलाषा पूर्ण करो, दाता को प्रिय करो, ऐसी ऋग्वेद में श्रद्धा से प्रार्थना की गई है।

पद 48

आनन्द रूप परमेश्वर को, ऐ मन तुम बारम्बार भजो।
सुख में दुःख में हर रंग ढंग में, छल छोड़ पुकार-पुकार भजो ॥1॥
चाहे तुम सीता राम कहो या केवल राधेश्याम कहो।
अपनी श्रद्धा रुचि भक्ति सहित, साकार या निराकार भजो ॥2॥
चाहे तुम नमः शिवाय कहो या नमो वासुदेवाय कहो।
प्रभु परमपिता जगदीश कहो या सत्य नाम ओंकार भजो ॥3॥
वाणी से शुभ गुणगान करो, मन से तुम सुमिरन ध्यान करो।
सब काम धाम में लगे हुए, तुम शक्तिमान कर तार भजो ॥4॥
अखिलेश कहो परमेश कहो देवेश रमेश महेश कहो।
तुम पथिक रूप में सर्व साक्षी, तत्व विचार-विचार भजो ॥5॥

सन्त वचन

धन, मान, भोग की कामना करते हुए भजन भोग बनता जो साधक मन की प्रतिकूलताओं को सहन करता है समय को व नहीं खोता, गुरु आज्ञा लेकर ही साधन साधनाभ्यास करता है साधक भजन पूरा कर पाता है।

पद 49

आज आनन्द मनायें हम प्रेम से प्रभु गुण गायें हम।
मोह निद्रा में जो सोते, दुःखद स्वप्नों में जो रोते।
मान, धन, भोगों के पीछे व्यर्थ जीवन हैं जो खोते।
ज्ञान में उन्हें जगायें हम ॥1॥ आज.... ॥
ज्ञान से मिटती है ममता ज्ञान से ही आती समता,
ज्ञान से सम्मति गति मिलती त्याग की तप की भी क्षमता।
ज्ञान में दर्शन पायें हम ॥2॥ आज.... ॥
प्रेम ही है इस जग में सार, प्रेम बस प्रभु लेते अवतार,
प्रेम बिन पूर्ण नहीं होते, प्यार, सम्मान, दान, उपकार,
प्रेम मय ही हो जायें हम, आज आनन्द मनायें हम ॥3॥
ध्यान में देखें जब तन को, विचारों को चंचल मन को
नहीं दिखता हे कुछ अपना, हटाते ही अपने पन को।
पथिक क्या बनें बनायें हम, आज आनंद मनायें हम ॥4॥

सन्त वचन

उपासना से ही वासना का अन्त होता है नित्य सुलभ सत्‌चित आनन्द स्वरूप परमात्मा से निरन्तर अभिन्न आत्मा में बुद्धि को लगाये रहना ही सत्योपासना है।

पद 50

आनन्द घन राधेश्याम बोलो।
ऐ मन तू सभीशाम, राधे श्याम बोलो ॥1 ॥
नयनाभिराम बोलो, लीला ललाम बोलो।
सब विधि होके निष्काम राधेश्याम बोलो ॥2 ॥
कुंज बिहारी बोलो, कृष्ण मुरारी बोलो।
प्रेम सहित ऐ पावन नाम, राधे श्याम बोलो ॥3
केशव गोविन्द बोलो, माधव मुकुन्द बोलो।
तुम निशिदिन प्रातः शायं, राधेश्याम बोलो ॥4 ॥
मोहन नटनागर बोलो, गोपाल गिरधारी बोलो।
पथिक परम प्रेम के धाम, राधेश्याम बोलो ॥5

सन्त वचन

श्रद्धा से परमार्थ की उपलब्धि होती है।
श्रद्धा स्वरूप भगवती को नमस्कार किया जाता है।
श्रद्धा से ही सद् ज्ञान उपलब्ध होता है।

पद 51

इस दर से न जायेंगे, इस दर से न जायेंगे।
हर एक बहाने से, गुण आपके गायेंगे ॥इस० ॥1 ॥
इस जग में किस तरह से भटके कहां कहां हम।
कुछ ख्वाहिशों को लेकर अटके कहां कहां हम।
अब तो यही देखेंगे जो आप दिखायेंगे ॥इस० ॥2 ॥
सरकार आपका ही बस एक सहारा है।
बस आपकी शरण में उद्धार हमारा है।
ले ले के नाम हर दम हम आपको ध्यायेंगे ॥इस० ॥3 ॥
हम तो उसी में खुश हैं जो आपकी मर्जी है।
कुछ अर्ज रह न जाये मेरी यही अरजी है।
हर राग में इतनी ही फरियाद सुनायेंगे ॥इस० ॥4 ॥
भूलूँ न कहीं तुमको दुख हो या कहीं सुख हो।
हर हाल में हमारे प्रभु आप ही सनमुख हों।
हम पथिक तो इसी में आनंद मनायेंगे ॥इस० ॥5 ॥

सन्त वचन

श्रद्धावान ही साधना में तत्पर होता है, इन्द्रियों में संयम कर पाता है श्रद्धा के जाग्रत होने पर ही अहंकार सत्य के लिए झुकता है और पूज्यास्पद गुरु की शरण लेता है।

पद 52

ऐ मन हरि का नाम न भूलो, परमात्मन् सुखधाम न भूलो
श्री सीता पति राम न भूलो, राधेश्वर घनश्याम न भूलो
जो हुआ सो हुआ चेत लो, बिगड़ी बन जायेगी अभी समय है।
अपने सुख स्वार्थ के साधन में, परस्वार्थ न छीनो, यही विनय है।
निज कर्म सुधर्म को छोड़ो नहीं, हरि शरण गहो फिर क्या भय है।
शरणागत पथिक को तो छोड़े नहीं, हरि का तो हृदय करुणामय है।
ऐ मन हरि का नाम न भूलो परमात्मन् सुखधाम न भूलो ॥1॥
भौतिक सुखों से सुखी जीवन क्या, यह जीवन पशु भी जीते हैं।
इस भांति प्रमांद में भूले हुए, सोचो तो कितने युग बीते हैं कितने
वो भूमि के भार से बने रहें जो, स्वधर्म हरि भक्ति से रीते हैं।
जीते तो वहीं हैं वीर पथिक जो कि, प्रभु प्रेमामृत पीते हैं
ऐ मन हरि का नाम न भूलो, परमेश्वर सुखधाम न भूलो ॥2॥
भगवान की भक्ति में जो सुख है, विषयी जन जान क्या पायेंगे।
मन की दासता में भूले हुए, जीवन भर ठोकर खायेंगे।
अभी मोहान्ध हैं सुनते ही नहीं, फिर रो रोकर पछतायेंगे।
पावेंगे शान्ति न तब लौं पथिक, सतसंग में जब लौट न आवेंगे।
ऐ मन हरि नाम न भूलो परमात्मान सुखधाम न भूलें ॥3॥

सन्त वचन

सन्त का निर्णय है कि तुम प्रेम में केवल परमात्मा को ही भरपूर देखो इस आत्मीयता से ही भक्ति हो जाती है।

पद 53

ऐ मेरे मन भावन श्याम अकथनीय प्रिय पावन श्याम।
परम सुहृद सुखकारी तुम हो प्रियतम हृदय बिहारी तुम हो।
सबके हृदय लुभावन श्याम ।।ऐ मेरे० ॥1॥
अतिकोमल चित शान्तिधाम तुम भक्तिद मुक्तिदपूर्ण काम तुम
संशय शोक नसावन श्याम ।।ऐ मेरे० ॥2॥
सर्व गुणश्रय गुणा तीत तुम पतित उधारन अति पुनीत तुम
अन्तरतिमिर मिटावन श्याम ।।ऐ मेरे० ॥3॥
जीवन के प्रभु जीवन तुम हो पथिक प्राण सरबस धन तुम हो।
चंचल चितचुरावन श्याम ।।ऐ मेरे० ॥4॥

सन्त वचन

परमार्थी साधक प्राणोपासना करते हैं। उन्हें शक्ति प्राप्त होती है इसी प्रकार मन की उपासना से सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

पद 54

ऐ मन तुम चलते फ़िरते बैठे गाओ हरि का नाम।
सच्चिदानन्द गोविन्द ओम नारायण हरि श्री राम ॥1॥
द्रौपदी दुखी हो कृष्ण नाम जिस समय पुकारा था।
दुस्शासन चीर खींचते हुए सभा में हारा था।
चीर रूप में उतर रहे थे स्वयं वही घनश्याम ॥2॥

गज लड़ता रहा जहाँ तक तन जन बल की आशा थी।
उस समय शरण ली प्रभु की जब सब ओर निराशा थी।
वह पूरा नाम न ले पाया कर गया सुदर्शन काम ॥3 ॥

नाम के सहारे कभी अटल पद ध्रुव ने पाया था।
प्रहलाद् भक्त ने नामी को खम्भे में बुलाया था।
नृसिंह रूप से हिरणाकुस पहुंचाया है निज धाम ॥4 ॥

पापी अभिमानी प्रभु का पावन नाम ना ले पाते।
वे कर्म जाल में फंसे हुए, जग में आते जाते।
तुम पथिक प्रेम से प्रभु को ध्यायो निश दिन प्रातः शाम।
ऐ मन तुम चलते फिरते बैठे गाओ हरि नाम।

सन्त वचन

सांसारिक विनाशी नामों के सहारे विनाशी रूपों से सम्बन्ध जुड़ जाता है इसी प्रकार अविनाशी प्रभु के नामों के द्वारा प्रभु से सम्बन्ध जुड़ जाता है पवित्र नामों के स्मरण से पवित्रता आती है।

पद 55

कृपा यही है जबकि तुम्हारी याद अचानक आ जाती है।
बार-बार चुपके से आकर व्याकुल मुझे बना जाती है॥
जगती तल के कोलाहल में जब खो देता हूं अपने को।
अपने में जग को रख लेता सत्य समझ लेता सपने को।
तब यह बतलाने कि जग के सुख में कोई सार नहीं है।

तब यह समझाने कि तुम्हारा इस पर कुछ अधिकार नहीं है।
देव तुम्हारी यही शुभ-शुभ स्मृति सुख में ही दुःख दरसाती है॥1 ॥
जब बसंत की सुखद समीर में तरु झूम-झूम जाते हैं।
कोयल कहीं कूकती है फिर भौंरे कहीं गुन गुनाते हैं।
चारों ओर प्रकृति की मादकता हमको मोहित करती है।
याद तुम्हारी उसी समय मेरे मन में बिराग भरती है।
होती नहीं सदा वो वह अच्छी बात जो मन को भाती है॥2 ॥
जहाँ कि लद जाती है जड़ता मेरी पावन चेतनता पर।
जहाँ विषमता विजयी होने लगती है मेरी समता पर।
मैं सत्याश्रय छोड़ परिस्थितयों के आगे झुक जाता हूं।
ठुकराया जाता हूं, तब तो शान्ति शरण में ही पाता हूं।
तुम जब दूर पथिक को लगते स्मृति पुनः निकट लाती है॥3 ॥

पद 56

गति मति जग ब्योपार में कर्तार की बस प्रभु ही जाने।
कारण कार्य कहाँ से आया, किस प्रकार कब विश्व बनाया।
विधि प्रपंच विस्तार में निस्तार की, बस प्रभु ही जाने॥
जहाँ कुशल मति थाह न पाती, बुद्धि बिलक्षण चुप हो जाती।
प्रकृति विकृति व्यापार में, संसार की बस प्रभु ही जाने॥
जग के अति सुविशाल सदन में, भ्रमित जीव के करुण रुदन में।
प्रभु बिन विनय पुकार में उद्धार की, बस प्रभु ही जाने॥
रोते को किस तरह हँसाते, सोते को किस तरह जगाते।

दुखियों के उपचार में शुचि प्यार की, बस प्रभु ही जाने।
गिरा हुआ किस भाँति चढ़ा है, रुका हुआ किस तरह बढ़ा है।
करुणा पुनरुद्धार में उपकार की, बस प्रभु ही जाने।
मेरे प्रियतम सच्चिदानन्द घन, सर्व प्रकाशक सबके जीवन।
प्रतिपल पथिक विचार में, आधार की बस प्रभु ही जाने॥

सन्त वचन

अनेक नाम रूपों में एक चेतन तत्व को देखो, इस सत्य का अनादर न करो। सत उसे ही कहते हैं जो निरन्तर है सबका है कभी त्याग नहीं हो सकता। सत से कभी भिन्नता तथा दूरी नहीं हो सकती है।

पद 57

जीवन के आधार हमारे राधेश्याम।
भजलो बारम्बार हमारे राधेश्याम॥
चलते फिरते रो के, गा के,
दुःख सुख में मन को समझा के।
कहो पुकार-पुकार हमारे राधेश्याम ॥ जीवन के आधार॥
जय योगेश्वर कृष्ण मुरारी,
भक्त भाव मय लीला धारी।
करते भव से पार हमारे राधेश्याम ।।जीवन के आधार॥
हृदय रमन करूणा के सागर,
अनुपम अति सुन्दर नटनागर।

स्वयं प्रेम साकार हमारे राधे श्याम॥ जीवन के आधार॥
कुछ ही दिन का यह जीवन है,
प्रभु ध्यान ही सुखमय जीवन है।
पथिक मुक्ति दातार, हमारे राधेश्याम ।।जीवन का आधार॥

सन्त वचन

समय प्रेम जब भगवान मय हो जाता है तभी मनोभिलषित भगवान के दर्शन भी होते हैं। प्रेम योग या ध्यान योग ही अहंकार को विसर्जित करने का उपाय है।

पद 58

जीवनेश प्रभु जीवन के दिन यूं ही बीते जाते हैं।
हम तुममें तुम हममें ही हो फिर भी देख न पाते हैं॥
शान्ति सुलभ पर त्याग नहीं शक्ति सुलभ पर तप से हीन।
कैसे सद्गति प्राप्त करें हम सभी भांति से दुर्बल दीन॥
तृष्णा तल में भटक रहा मन होकर चंचल महा मलीन।
मेरा उठना तो अब केवल एक तुम्हारे ही अधीन॥
कृपादृष्टि से वंचित रहने तक ही पाप सताते हैं।।जीवन०॥
चढ़ा हुआ है जब तक उर में राग द्वेष का कलुषित रंग।
जब तक दुर्गुण दोषों से यह शुद्ध न होते दूषित अंग॥
तब तक तुमको पा न सकेंगे कितनी ही हो प्रबल उमंग।
अब कुछ ऐसी शक्ति हमें दो जिसके बल हो सकें असंग॥

वही देखते जाते हम जो कुछ भी आप दिखाते हैं।।जीवन।।
जो चाहा वह मिला अभी तक केवल शेष यही अभिलाष।
सब कुछ तजकर भजूँ तुम्हीं को कर दो यह भी पूरी आश।
मिट जायें सब दुःख हमारे कट जायें सारे भव पाश।
हर लो मेरी सारी दुरमति कर दो पावन ज्ञान प्रकाश।
यही प्रतिज्ञा है अब तक मेरा मोह मिटाते हैं।।जीवन०।।
यह सच है हो चुका अभी तक अगणित पतितों का उद्धार।
मिल न सकेगा ऐसा कोई जिस पर हो न तुम्हारा प्यार।
सब समर्थ परम संरक्षक प्राणि मात्र के परमाधार।
हम भी एक पतित प्राणी हैं अब हमको भी कर दो पार।
भूले भटके हुए पथिक हम शरण तुम्हारी आते हैं।।

पद 59

जै सिया राम जै सिया राम, राम राम नाम बोलो।
राधेश्याम राधेश्याम श्याम, श्याम नाम बोलो।।
प्रभु को पाने के लिए केवल सहारा नाम है।
दुःखद माया जाल से मुक्ति का द्वारा नाम है।
नाम लेकर देखता हूं कितना प्यारा नाम है।
भटकते को यह दिखा देता किनारा नाम है।
जै सिया राम जै सिया राम, राम राम नाम बोलो।
राधेश्याम राधेश्याम श्याम, श्याम नाम बोलो।।
भक्त, ध्रुव, प्रहलाद ने महिमा दिखाई नाम की।

संत तुलसी, सूर नानक ने कीर्ति गायी नाम की।
और मीरा ने कहां तक लीला गाई नाम की।
समय पर हर एक ने है दी दुहाई नाम की।
जै सिया राम जै सिया राम, राम राम नाम बोलो।
राधेश्याम राधेश्याम श्याम, श्याम नाम बोलो।।
न जाने कितने अधम तो तर गए हैं नाम से।
मेरु सरिस महान दुःख भी हर गए हैं नाम से।
कठिन पाप समूह तुरत बिखर गए हैं नाम से।
असम्भव को भक्त सम्भव कर गए हैं नाम से।।
जै सिया राम जै सिया राम, राम राम नाम बोलो।
राधेश्याम राधेश्याम श्याम, श्याम नाम बोलो।।
भक्त जन भगवान को हैं नित्य पाते नाम से।
स्वयं हरि भी प्रकट होते चले आते नाम में।
सृष्टि के सब रूप रंग भी हैं समाते नाम में।
पथिक अनुपम शान्ति परमानन्द, पाते नाम में।
जै सिया राम जै सिया राम, राम राम नाम बोलो।
राधेश्याम राधेश्याम श्याम, श्याम नाम बोलो।।

सन्त वचन

कोई भी प्रयत्न न करके अपने में ही परमात्मा को स्वीकार किये रहो।

पद 60

जो खोज से कहीं भी पाये नहीं जाते हैं।
वह आप प्रभु भक्तों के भाव में आते हैं॥1॥
जब आप प्रकाशक जीवन के प्राण मन के।
यह भूल है कि बाहर हम खोज लगाते हैं॥2॥
निज लोभ मोह बस ही प्राणी जगत में अटके।
जो प्रेमी है वह अपने में आपको पाते हैं॥3॥
जिसको कि आपने ही निज भेद दे दिया है।
वह पथिक आपमें ही आनन्द मनाते हैं॥4॥

सन्त वचन

दृढ़ निश्चय कर लो कि मैं परमात्मा का हूं और जो कुछ दीखता है यह सब परमात्मा का है। पापी में पुण्यवान में परमात्मा निर्विकार प्रतिष्ठित हैं, परन्तु अहंकार ही नित्य सत्य से विमुख है।

पद 61

जो खोजते हैं पायेंगे वह ध्यान किसी दिन।
सद्भाव से मिल जायेंगे भगवान किसी दिन॥1॥
गज, गीध अजामिल वो गणिकादि को देखो।
इनका भी किया प्रभु ने कल्यान किसी दिन॥2॥

मुनियती ब्रती तपसी सब पीछे पड़ गये।
शवरी के घर में प्रभु बने मेहमान किसी दिन॥3॥
सुनते हैं वो हृदय की सच्ची पुकार को।
दिखलायेंगे फल अपना विनय गान किसी दिन॥4॥
भूलो नहीं परमात्मा हर काम धाम में।
होगा सभी दुःखों का अवसान किसी दिन॥5॥
मिल जाते पथिक प्राण नाथ प्रेम भाव में।
अपने ही को कर देते हैं वे दान किसी दिन॥5॥

सन्त वचन

परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं है किन्तु व्यक्तिमय है, परमात्मा ही सर्व शक्तिमान है सर्व गतिमय है परमात्मा ही सत् चेतन है परमात्मा हमसे भी अधिक निकट निरन्तर विद्यमान है।

पद 62

नमो नारायण नमो नारायण नमो नारायण ही नित गाऊँ।
यही एक अभिलाष हृदय की किस विधि से प्रभु तुमको पाऊँ।
तुम्हीं बता दो कौन जतन से मेरी हो यह पूरी आशा।
किस प्रकार के प्रिय शब्दों में अपने प्रेमोद्गार सुनाऊँ॥
निज अन्तर की अकथ वेदना मूक भावनायें जो मन की।
तुम अन्तर्यामी सब जानो मन से मन को ही समझाऊँ॥
मैं अति दीन दरिद्र मन्द मति अहंकार से युक्त मूढ़ हूं।

यही बता दो किस साधन से नित्य योग आनन्द मनाऊँ॥
किस विधि मुक्त हो सकूँ अब मैं जग प्रपंच के बंधन दुःख से।
मुझे यही साधन बतला दो कैसे मन का राग मिटाऊँ॥
नाथ तुम्हारी कृपा किरण से आलोकित हो मेरा जीवन।
योग्य तुम्हारे बनूं पथिक मैं, तुमको निज सर्वस्व बनाऊँ॥

सन्त वचन

बीते हुए का मनन न करो आगे की चिन्ता न करो वर्तमान में किसी संयोग में रस न लो परम प्रभु के लिए व्याकुल रहो यही भजन है।

पद 63

परम प्रभु सब उर बासी हैं।
विनाशी में अविनाशी हैं॥1॥
न पाते भोगी प्रभु का भेद, उन्हें घेरे रहते भय खेद।
वृत्तियाँ इन्द्रिय दासी हैं, परम प्रभु सब उर वासी हैं।
प्रभु कृपा से मिटता अज्ञान, चतुर्दिक दिखते नित्य महान।
निरंतर आनन्द रासी हैं, परम प्रभु सब उरवासी हैं॥
जहाँ होता सब कुछ का अन्त, वहीं प्रभु पूर्ण अखण्ड अनंत।
सर्व मैं स्वयं प्रकाशी हैं परम प्रभु सब उर बासी हैं॥
जहाँ मिल जाता ज्ञान लोक न रहता लोभ मोह मद शोक।
पथिक हिय बीच बिलासी हैं, परम प्रभु सब उर बासी॥

सन्त वचन

विनाशी वस्तुओं व्यक्तियों से असङ्ग होने पर योग और ज्ञान सुलभ होता है। किसी तरह तुम सबमें परमात्मा की विद्यमानता न भूलो। अपने चेतन स्वरूप आत्मा में सन्तुष्ट तृप्त रहना ही योगस्थ आत्मस्थ होना है।

पद 64

प्रभु जानते हैं सब कुछ हम फिर भी सुनाते हैं।
जो कुछ दशा है मन की कहने में लजाते हैं॥1॥
हे नाथ तुम्हीं से तो मिलता है हमें सब कुछ।
तुमको ही भूल करके हम दुःख उठाते हें॥2॥
खोजे कहाँ तुम्हें हम किस रूप में पहचानें।
तुममें ही हैं पर तुमको हम देख नहीं पाते हैं॥3॥
अभिमान मोह माया में मग्न हो रहे हम।
उद्धार के लिये अब प्रभु तुमको बुलाते हैं॥4॥
वह त्याग का बल दे दो जिससे कि शान्ति पायें।
हम पथिक तुम्हीं से प्रभु यह आशा लगाते हैं॥5॥

सन्त वचन

जब तक तुम सत् चेतन ज्ञान स्वरूप आत्मा में ही मन को नहीं लगाओगे, आत्मा में ही बुद्धि को स्थिर नहीं करोगे, आत्मा में ही अहंकार को समर्पित नहीं देखोगे तब तक सुख के अन्त में दुःख से तथा विपत्तियों सेमुक्त नहीं हो सकोगे।

पद 65

प्रभु तुम सांचे सबके मीत

किसी किसी ने तुमको जाना और तुम्हें जैसे भी माना।
भक्तों के भावानुसार बन नित्य निवाही प्रीत।।प्रभु०।।
तुम रहते हो सदा संग में शक्ति तुम्हारी अंग अंग में।
किन्तु तुम्हें प्रभु पहचाने बिन हम दुर्बल भयभीत।।प्रभु०।।
तुममें कुछ भी चाह नहीं है यहां चाह की थाह नहीं है।
तुमसे ही सब कुछ पाकर हम गाते सुख के गीत।।प्रभु०।।
तुम ही दुखियों के दुख हरते तुम पतितों को पावन करते।
साथ तुम्हारे चिन्तन से ही, होता चरित पुनीत।।प्रभु०।।
तुमने हमको कभी न छोड़ा हमने ही तुमसे मुख मोड़ा।
इसीलिए भूलते भटकते, गये बहुत दिन बीत।।प्रभु०।।
हर लो अब अज्ञान हमारा, रहे सदा ही ध्यान तुम्हारा।
देख सकें सर्वत्र पथिक हम तुमको मायातीत।।प्रभु०।।

सन्त वचन

कृपा सभी बलों से श्रेष्ठ है अभिमानयुक्त मानव कृपा आश्रय नहीं ले सकता, दुःख अपनी भूल से, आनन्द की कृपा से प्राप्त होता है।

पद 66

प्रभु अपने मन में बसाऊ तुम्हीं को।
हृदय में हृदय धन बिठाऊँ तुम्हीं को॥
यही एक स्वीकार मेरी विनय हो।
विमल हो मलिन मन सदा ध्यान लय हो।
तुम्हीं से हमारा ये जीवन अभय हो।
स्वचित चेतना वृत्ति गति प्रेममय हो।
हर एक श्वांस से अब बुलाऊँ तुम्हीं को।।प्रभु०।।
दिखाया है मुझको किनारा तुम्हीं ने, दिया मुझ निर्बल को सहारा तुम्हीं ने।
सुपथ में कुपथ से पुकारा तुम्हीं ने, मुझे घोर दुःख से उबारा तुम्हीं ने।
जगत में दयानाथ पाऊँ तुम्हीं को।।प्रभु०।।
कहीं भी रहूं पर रहे ध्यान तुम पर, निकलते रहे यह बिरह गान तुम पर
रमो प्राण में तुम रमें प्राण तुम पर, निरंतर रहे ज्ञान अवधान तुम पर।
सुनूँ मैं तुम्हारी सुनाऊँ तुम्हीं को।।प्रभु०।।
तुम्हीं एक हो जीवनाधार भगवान तुम्हीं प्रेमियों के हो साकार भगवान।
तुम्हीं देखे जाते निराकार भगवान तुम्हीं जग के इस पार उस पार भगवान।
पथिक के तुम्हीं एक ध्याऊँ तुम्हीं को।
प्रभो अपने मन में बिठाऊँ तुम्हीं को॥

— प्रीति की प्यास वही जो कभी बुझे नहीं, प्रीति का पेट वही जो कभी भरे नहीं, प्रीति का जल वही जो कभी घटे नहीं। चाह को व्याकुलता से, प्रेम को त्याग से, प्यार को सेवा से, प्रीति को चिन्तन से, उदारता को दान से नापकर देखो।

पद 67

सबके परमाधार यही हो कृपा हुई तब जान सके हम।
तुम महानतम् कण-कण में तुम, तुम शाश्वत हो क्षण-क्षण में तुम॥
लिए विश्व विस्तार यहीं तुम, कृपा हुई तब जान सके हम॥
अचल, अनन्त, अनघ, अविकारी, भक्तिभाव वश लीलाधारी
दाता परम उदार यहीं हो, कृपा हुइ तब जान सके हम॥
जड़ तन मन के जीवन हो तुम, नित्य सत्य आनंद घन हो तुम
सर्व कला भंडार यही हो, कृपा हुई तब जान सके हम॥
चलता तुममें यह जग सारा, तुमसे बहती जीवन धारा।
अनुपम प्रेमागार यहीं हो, कृपा हुई तब जान सके हम॥
कभी पथिक से भिन्न नहीं तुम, जहाँ रहे हम नित्य वहीं तुम
एक अनन्त अपार यहीं हो, कृपा हुई तब जान सके हम॥

सन्त वचन

हमें समझाया गया है कि जिसका किसी प्रकार त्याग किया नहीं जा सकता इसी में सत्य आनन्द है। इसी को जान लो इसी को चेतन आत्मा कहते हैं, इसी चेतन तत्व को शक्ति द्वारा ही देह में, इन्द्रियों में, मन में, बुद्धि में, अहंकार में समस्त क्रिया होती रहती है।

पद 68

सभी कुछ देते जाते आप हैं, अकथ है जो कुछ दिखाते आप हैं।
देखता हूं किस तरह कितनी कठिन मुश्किलों से भी बचाते आप हैं॥1॥
जहाँ पर भी हमें गिरते देखते वहीं से ऊँचे उठाते आप है।।
मोह ममता में फँसे इस जीव को जिस तरह भी हो छुड़ाते आप हैं।
डूबते देखा जहां दुःख सिन्धु में किनारे आकर लगाते आप हैं॥
जहाँ पर मेरे लिए जो उचित हैं युक्तियाँ सारी बताते आप हैं।
जानता हूं मैं पथिक कितना पतित उसे भीपावन बनाते आप हैं॥

सन्त वचन

सब प्रकार के मनन का त्याग कर दो। हृदय में कुछ भी न स्वीकार करो तभी मुक्त स्वरूप आत्मा का अनुभव होता है। जहाँ अहं के आकार नहीं रहते वहीं पर आत्मा शेष रहती है। अपने में सन्तुष्ट रहना ही योगस्थ होना है।

पद 69

हर शय में हर एक शान में, भगवान तुम्हीं हो।
हर जान में बेजान में भगवान तुम्हीं हो॥1॥
ईसाई सिक्ख बुद्ध यहूदी वो पारसी।
हिन्दू में मुसलमान में भगवान तुम्हीं हो॥2॥

गिरजा हो या मन्दिर हो मस्जिद हो या समाधि।
हर दीन में ईमान में भगवान तुम्हीं हो ॥3 ॥

वेदों में पुरानों में गुरु ग्रन्थ तन्त्र में।
उस बाईबिल कुरान में भगवान तुम्हीं हो ॥4 ॥

पंडित हो मोलवी हो या पोप पादरी।
सब मत में भगवान में भगवान तुम्हीं हो ॥5 ॥

हर ऋतु में हर दिशा में दिन रात सुबह शाम।
बस्ती में या बीरान में, भगवान तुम्हीं हो ॥16 ॥

इस लोक में परलोक में या जन्म मृत्यु में।
धरती में आसमान में भगवान तुम्हीं हो 17 ॥

हर नाम में हर रूप में, हर रंग ढंग में।
पथ में पथिक के ज्ञान में भगवान तुम्हीं हो ॥8 ॥

सन्त वचन

ज्ञान में तुम माया की अद्‌भुत कृति को देखो, यह माया एक को अनेक दिखा देती है, असत् को सत् दिखा देती है, हजार घड़ों में हजार सूर्य नहीं है परन्तु दीखते हैं जबकि सूर्य एक है।

पद 70

॥हरे राम राम बोलो हरे कृष्ण श्याम बोलो ॥
जानकी जीवन बोलो राधा मन मोहन बोलो।
जै जै श्री रघुपति बोलो जै जै श्री बृजपति बोलो।
जै राघव आनन्द बोलो जै माधव मधुसूदन बोलो ॥हरे० ॥
जै श्री कौसल चन्द्र बोलो, जै केशव गोविन्द बोलो।
जै भक्तन हितकारी बोलो जै नटवर बनवारी बोलो ॥
जै जुगुल नाम सब मिलकर बोलो पथिक प्राण जीवन धन बोलो।
हरे राम राम बोलो हरे कृष्ण श्याम बोलो ॥

सन्त वचन

मन्दिरों में राम कृष्ण के दर्शन करते-करते जब अन्तःकरण शुद्ध होगा तभी अपने में राम कृष्ण को पहचान लेना सरल होगा। जो रूप तुम्हारी प्रीति में भर गया है वह हटाये नहीं हटता और भगवान का ध्यान जमाने से नहीं जमता क्योंकि प्रीति नहीं है।

पद 71

॥हमारे मोहन दुलारे मोहन ॥
इधर दयामय दरस दिखाना, अधम समझ कर भूल न जाना
हमारे मोहन दुलारे मोहन ॥1 ॥

न गोपियों का सा प्रेम हममें ना कोई तप व्रत या नेम हममें।
न जानते हैं तुम्हें रिझाना, हमारे मोहन दुलारे मोहन ॥2 ॥
सभी के आधार एक हो तुम वही करो चाहते हो जो तुम।
चाहे हंसाना चाहे रुलाना हमारे मोहन दुलारे मोहन ॥3 ॥
अनेक पतितों को तुमने तारा उसी दया का ही है सहारा।
तुम्हारे बल से हैं तुमको पाना हमारे मोहन दुलारे मोहन ॥4 ॥
तुम्हीं से मिलने की एक धुन है ना और कुछ भी उधेड़ बुन है।
पथिक का तुम से ही रोना गाना, हमारे मोहन दुलारे मोहन ॥5 ॥

सन्त वचन

तुम किसी मूर्ति का ध्यान करते हो इसे ध्यान न मानो यह तो अभ्यास हो सकता है। साकार ध्यान में प्रेम की आवश्यकता है, निराकार आत्मा के ध्यान में बीते हुए की स्मृति तथा भविष्य का चिन्तन हटाकर वर्तमान में मन ठहराने की आवश्यकता है।

पद 72

॥हरे राम श्री कृष्ण श्याम की पावन वाणी बोलो ॥
क्या करना है क्या करते हो, सोचो आँखें खोलो।
जीवन में प्रेमामृत भर लो नहीं द्वेष विष घोलो ॥1 ॥
देखो अब निज स्वार्थ छोड़कर तुम परमार्थ टटोलो।
सत्य असत को लोभ मोह बस एक भाव मत तोलो ॥2 ॥
अब तो हरि के प्रेम रंग में अपना हृदय भिगोलो।
जो कुछ बने सुकृत सरिता में निज पापों को घोलो ॥3 ॥

मृत्यु निशा आने वाली है अब इत उत मत डोलो।
पथिक तुम्हें घर चलना हो तो सतगुरु के संग होलो ॥4 ॥

सन्त वचन

आँखों से जो कुछ देखते हो उस पर विश्वास न कर लेना, जिसके द्वारा देखते हो उसे बिना देखे मानकर विश्वास करना, विश्वास हो परमात्मा को अपना मानने के लिए, प्रेम हो परमात्मा मय होने के लिये।

पद 73

हमने सतगुरु से ज्ञान गीत गाना सीखा है।
समझ पाये हैं जितना वही समझाना सीखा है ॥1 ॥
बुद्धि बालक वत जिनकी वो फुसलाये जाते हैं।
रागी मन वालों को कुछ देर रिझाना सीखा है ॥2 ॥
कभी रटते हैं कोई पढ़ते हैं कुछ सीखते हैं।
जो कि विद्वान हैं उनको समझाना सीखा है ॥3 ॥
अभी लेने देने की बात बहुत दूर दिखती।
अधिक जन प्रवचन सुनने भर को आना सीखा है ॥4 ॥
मोह निद्रा में कोई सोते कोई जाग जाते।
बहुत लोगों ने तो बस मन मनाना सीखा है ॥5 ॥
बिना सीखे ही लोभी मोही कामी क्रोधी थे।
गुरु कृपा के बल से अब दोष मिटाना सीखा है ॥6 ॥

जहाँ मानव पशुता का परिचय देता भोगी बन।
हमने पशुता में मानवता को लाना सीखा है॥7॥
हमको सत् संगति से जब सद् विवेक मिल पाया।
उसी के द्वारा सबसे नेह निभाना सीखा है॥8॥
जहाँ से प्रीतम प्रभु की खोज का आरम्भ होता।
वहीं पर लौट करके प्रभु को पाना सीखा है॥9॥
खोजा हमने भी बहुत पाया कुछ भी ना बाहर।
पथिक मय प्रभु ही है यह ध्यान लगाना सीखा है॥10॥

पद 74

हम जान गये तुम हो पर कुछ भी नहीं हो।
जो कुछ हो विलक्षण हो तुम जैसे भी कहीं हो॥
तुम झलक दिखाते कभी ज्ञानी के ज्ञान में।
तुम समझ में आते कभी ध्यानी के ध्यान में॥
तुम चेतना बन चमकते हो स्वाभिमान में।
तुम छुद्र में हो और तुम्हीं हो महान में॥
इस झूठ के पर्दे में हो जो कुछ हो वो सही हो॥ हम जा०॥
जिस दर पे आके जाना फिर कहीं जाना नहीं रहे।
मन के लिये कोई भी बहाना नहीं रहे।
माया के लिये मन में ठिकाना नहीं रहे।

पाकर तुम्हें फिर कुछ कहीं पाना नहीं।
रहे मेरी यह चाह है कि तुम्हारी ही चाह हो॥ हम जा०॥
तुमको कभी दूरति दूर मान रहे हम।
आनन्द में चिन्मात्र कभी ज्वर न रहे हम।
अपने ही रूप में कभी पहचान रहे हम।
संसार में क्या सार है, यह छान रहे हम॥
हमसे वो दूर कर दो जो कुछ भूल रही हो॥ हम जा०॥
तुमसे ही मिला करता पुण्य पाप का जीवन।
तुमसे ही मिला करता वर या शाप का जीवन।
तुमसे ही दीखता है शीत ताप का जीवन।
तुमसे ही पाते हैं अपने आप का जीवन॥
मुझ पथिक को दिखते नहीं हो फिर भी यहीं हो॥ हम जा०॥

पद 75

हम भी होंगे कभी भव से पार प्रभु की शरण लिए।
दूर होंगे कभी तो विकार प्रभु की शरण लिए।॥1॥
असत से हम नहीं सम्बन्ध तोड़ पाते हैं।
अभी सत् से नहीं सम्बन्ध जोड़ पाते हैं।
सुख के लोभ मन को न मोड़ पाते हैं।
सभी छिन जायेगा पर हम न छोड़ पाते हैं।
कभी अपना भी होगा सुधार, प्रभु की शरण लिए॥2॥
मिला जो कुछ है वह सब हे प्रभु तुम्हारा है।

किन्तु अज्ञान बस हम मानते हमारा है।
जहाँ तक लग रहा सुखोपभोग प्यारा है।
वहाँ सत् का नहीं बस असत् का सहारा है।
पूर्ण होंगे कभी सद् विचार प्रभु की शरण लिए।।3 ।।
कभी अपना कठोर हृदय भी कोमल होगा।
सभी अभिमान छोड़ कृपा का ही बल होगा।
नाम के आश्रय से मन कभी निश्चल होगा।
काम पूरा ही होगा आज नहीं कल होगा।
हम तो करते रहेंगे पुकार, प्रभु की शरण लिए।।4 ।।
भक्तों की बाणी में यह मंत्रगान प्रभु की शरण।
ज्ञानी भी लेते हैं हो निरभिमान प्रभु की शरण।
निराश प्रेमी का अमोघ ध्यान प्रभु की शरण।
बना देती है लघु से महान प्रभु की शरण
उतर जाता पथिक के मन का भार प्रभु की शरण लिए।।

पद 76

हमने पाया कुछ ज्ञान और, हो गई जान पहचान और।
सुनते कितने ही जगदीश्वर श्री विष्णु हमारे विश्वम्भर।
कोई जपते हैं श्री हरिहर वह परमतत्व क्षर में अक्षर।
उसके कितने ही ध्यान और हमने पाया कुछ ज्ञान और।।
कोई अव्वल हममें दीवाने कुछ गाते सोंह गाने।
कोई ईसा को प्रभु माने कुछ एक खुदा मालिक माने।

अपने-अपने भगवान और हमने पाया कुछ ज्ञान और ।।2 ।।
है तीर्थ कहीं सद् गति देते कुछ मंत्र सिद्धि युत मति देते।
कुछ व्रत हैं पुन्य सुकृति देते कुछ यज्ञ स्वर्ग की गति देते।
अपनी साधना विधान और हमने पाया कुछ ज्ञान और ।।3 ।।
कुछ प्राण समाधि लगाते हैं उससे ही मुक्ति दिलाते हैं।
कोई हम ब्रह्म सुनाते हैं कोई सब व्यर्थ बताते हैं।
कोई करते अनुमान और हमने पाया कुछ ज्ञान और ।।4 ।।
जो एक सच्चिदानन्द धाम व्यापक अविनाशी पूर्ण काम।
जिससे सब विकसित रूप नाम वह परमात्मन् लीला ललाम।
हम पथिक सुने कुछ गान और हमने पाया कुछ ज्ञान और।

सन्त वचन

बड़ी से बड़ी अच्छाई अभिमान आने पर बुराई में बदल जाती है। देहाभिमानी संसार का दास होता है। विवेक से अभिमान की निवृत्ति होती है।

पद 77

हृदय में ही अपने भगवान न भूलो मन तुम बन अन्जान।
आज जिसे तुम खोज रहे हो अपना खोकर ज्ञान।
उसको अपने ही में देखो तज माया अभिमान।।हृदय०।।1 ।।
जो चित्त शक्ति स्वरूप प्रेममय करो उसी का ध्यान।
यह तन मन प्राणों के जीवन अच्युत परम स्थान।।हृदय०।।2 ।।

तुम जल थल के जीव मात्र के पोषक एक समान।
तुमही सर्व सुखों के सागर अनुपम ज्ञान निधान।।हृदय०।।3।।
जो सर्वज्ञ, परम, श्रद्धास्पद सर्वाधार महान।
वह चित शक्ति स्वरूप सुधाकर पथिक उसे पहचान।।4।।

सन्त वचन

अपने आप में ठहरना ही सत्य योग की अनुभूति का द्वार है। ग्रंथाध्ययन से बचकर स्वयं को जानना ध्यान की सिद्धि है। सत्य जैसा है वैसा ही जान लेना ब्रह्म बोध है।

पद 78

हे परमात्मन् सुख धाम मेरे अन्तर्यामी।
सब विधि तुम्हें प्रणाम मेरे अन्तर्यामी।।1।।
इस जड़ तन में जीवनेश तुम अनुपम ललित ललाम।
हृदय बिहारी तुम दुःखहारी प्रेम रूप निष्काम। मेरे अन्तर्यामी
जब अखिलेश्वर जयति महेश्वर।
ध्याऊँ आठों याम मेरे अन्तर्यामी।।2।।
भव भय भंजन असुर निकन्दन।
तुम्हीं राम तुम्हीं श्याम मेरे अन्तर्यामी।।3।।
तुम सुख रासी स्वयं प्रकाशी।
हो व्यापक सब ठाम, मेरे अन्तर्यामी।।4।।
अविचल निर्भय हे करुणामय।
पथिक ना भूले नाम मेरे अन्तर्यामी।।5।।

सन्त वचन

तुम खोजकर देखो कि तुम्हारे भीतर क्या चाह है जिसके बिना तुम आनन्दित नहीं हो। असत की सहायता से सत नहीं मिलता असत अनित्य वही है जिससे इच्छाओं की उत्पत्ति होती है।

पद 79

।।हे मेरे मन भावन राम, मुझे बना लो पावन राम।।
परम सुहृद सुखकारी तुम हो प्रियतम हृदय बिहारी तुम हो।
सबके हृदय लुभावन राम।।मुझे०।।
अति कोमल चित्त शान्ति धाम तुम, भक्तिद मुक्तिद पूर्ण काम तुम।
संशय शोक नसावन राम।।मुझे०।।
सर्व गुणाश्रय गुणातीत तुम पतितों को करते पुनीत तुम।
अन्तर तिमिर मिटावन राम।।मुझे०।।
जीवन के प्रभु जीवन तुम हो पथिक प्राण सर्वस धन तुम हो।
चंचल चित्त चुरावन राम।।मुझे०।।

सन्त वचन

अपने में सन्तुष्ट रहना ही योगस्थ, आत्मस्थ होना है। यही निश्चय कर लो कि मैं चेतन आत्मा हूं। परमात्मा से निरंतर मिला हूं, मैं विनाशी जगत के नाम रूपों से मुक्त हूं।

पद 80

हे नटवर श्याम मुरारी हें गिरधारी।

विनय यही है तुमसे मेरी हे दीनानाथ।
दे दो अपना हे जीवन धन कृपा हाथ।
जिसके बल से तज दूँ जग की माया ममता सारी।हे॰॥
तुम बिन मेरी और सुनेगा कौन
पतित समझ कर मत हो जाना मौन।
देव तुम्हारी शरणागत हूं रखना लाज हमारी।हे॰॥
यद्यपि मैं हूं तप बल साधन हीन।
विषय विहारों से है हृदय मलीन।
किन्तु यही आशा बल मुझको तुम दीनन हितकारी।हे॰॥
मुझको तो कुछ अधिक नहीं है ज्ञान।
करूणा निधि की करुणा का ही है ध्यान।
मैं हूं पथिक तुम्हारा हे प्रभु चाहूं भक्ति तुम्हारी।हे॰॥

सन्त वचन

बुद्धि के उपासक को तत्व ज्ञान होता है तत्व ज्ञान होने पर अहं आत्मा का उपासक होता है तभी पूर्ण रूप से भय, चिन्ता, दुःख का अन्त होता है।

पद 81

॥हे मन मोहन हे जीवन धन॥

प्रेम निधे अनुपम महान तुम, हो समर्थ सद्‌गुण निधान तुम।
तुम में हो सर्वस्व समर्पण ।हे मन॰॥
तुम जैसे हो कहे न जाते।
किसी तरह से गहें न जाते। हो जाता तुममें तन्मय मन।हे मन॰॥
कहीं तुम्हारा ध्यान न भूलूँ, तुम अनन्त यह ज्ञान न भूलूँ।
तुम सब विधि सुन्दर आनन्द घन।हे मन॰॥
तुम अपने प्रियतम अपने में, हो जागृति सुषुप्ति सपने में।
अनुभव करते प्रेम पथिक जन।हे मन॰॥

सन्त वचन

प्रेम करना पराश्रय है केवल प्रेम में ही आनन्दित रहना सत्याश्रय है यह तभी सम्भव है जब बुद्धि शुद्ध हो स्थिर हो परमात्मा ही सर्वमय है वही सब कुछ है यह चिन्तन चित्त को शुद्ध कर देता है।

पद 82

हे जीवनेश तुमको आसान नहीं पाना॥
आसान भी इतने हो कि बस परदा ही हटाना॥1॥
यह परदा भी जो कुछ है अपना ही बनाया है।
अपने ही मन से मैंने जब दूर तुम्हें जाना॥2॥
मुझे कौन जानता था तुम्हें मानने के पहले।

तुम्हें अपना माना जबसे अब जानता जमाना ।।3 ।।
सब रूप बदलते हैं यह मन भी बदलता है।
पर तुम नहीं बदलते आना न कहीं जाना ।।4 ।।
सब खोज ही गलत है इक जानना काफी है।
जिसे भी जाना तुमको अपने में ही पहचाना ।।5 ।।
यह पथिक चलते-चलते, इस दर पे आ गया है।
यह द्वार आखिरी है, है आखिरी ठिकाना ।।6 ।।

पद 83

हे सुघर सलोने श्याम हमारे मन मोहन।
हे परमात्मन् सुखधाम हमारे मन मोहन ।।
हे प्रभु सर्वज्ञ ललाम हमारे मन मोहन ।हे सुघर० ।।
हे नित्य निरन्जन हे निष्क्रय।
हो तुम निर्भय निष्काम हमारे मन मोहन ।हे सुघर० ।।
हे करुणामय अविचल अव्यय।
अतुलित अनुपम अभिराम हमारे मन मोहन ।हे सुघर० ।।
हे ज्ञान ध्यान के परमाश्रय।
हे मुक्ति के विश्राम हमारे मन मोहन ।हे सुघर० ।।
तुम बाल्मीक के उलटे जप।
अरु तुलसी के श्री राम हमारे मन मोहन ।हे सुघर० ।।
तुम मीरा के गिरधर गोपाल।
हे सूरदास के श्याम हमारे मन मोहन ।हे सुघर० ।।

भक्तों के हित हो भाव रूप।
तुम सारे अगणित नाम हमारे मन मोहन ।हे सुघर० ।।
यह पथिक प्रेम से तुमको ही।
अब ध्याये आठोंयाम हमारे मन मोहन ।हे सुघर० ।।

पद 84

किस ओर जा रहा है मेरा बेकरार दिल।
क्या क्या दिखा रहा है मेरा बेकरार दिल ।।1 ।।
मिलती क़हीं नहीं मुझे तसकीन[1] की सूरत।
बेबस रुला रहा है मेरा बेकरार[2] दिल ।।2 ।।
ऐ अश्कोरोज[3] हिज्र[4] में कुछ दो तशल्लियाँ।
तुमको बुला रहा है मेरा बेकरार दिल ।।3 ।।
सीने में खटक आहो गम पहलू[5] में दर्द सा।
पागल बना रहा है मेरा बेकरार दिल ।।4 ।।
चुपचाप पड़े रहने में भी तो गुज़र नहीं।
मुझको उठा रहा है मेरा बेकरार दिल ।।5 ।।
अरमान रो रहे हैं हसरतों[6] की कब्र पर।
उनको मना रहा है मेरा बेकरार दिल ।।6 ।।
कुछ भी हो ऐ सरकार तुम्हारी ही राह पर।
चला आ रहा है मेरा बेकरार दिल ।।7 ।।
प्यारे तुम्हारे नाम को दिन रात पथिक बन।
गलियों में गा रहा है मेरा बेकरार दिल ।।8 ।।

1. संतोष, 2. बेताब 3. आंसू, 4. जुदाई, 5. बगल में, 6. चाह।

पद 85

खोजते जो तुम्हें सरकार कहीं पाही जाते हैं तलबगार[1] कहीं
कहीं कल से हैं बेकरार कहीं, कहीं मालिक हैं खाकशार[2] कहीं।
कहीं गुलज़ार[3] मिला ख़ार[4] कहीं, कहीं खिजां[5] चमन[6] बहार कहीं ।।2 ।।
कहीं बदशक्ल है श्रृंगार कहीं, कहीं आज़ाद गिरफ़तार कहीं
कहीं जंगल मिला बाजार कहीं, कहीं मजदूर है मुख्तार[7] कहीं
लुफ्त[8] क्या क्या है राह उलफ़त[9] में कहीं पैमार[10] बड़े प्यार कहीं
कहीं अमीर वा फकीर कहीं, कहीं नादान होशियार कहीं।
कहीं पै ताज़ पिन्हाया जाता बने मजदूर लिये भार कहीं।
कहीं खुशहाल होके रहते हैं गमें फ़ुरकत[11] में है बीमार कहीं।
कहीं राहत मिली कुछ होस हुआ बहे चस्मों[12] से अस्क[13] धार कहीं।
कहीं आशिक पथिक बने मासूक।
कहीं इस पार हैं उस पार कहीं 16 ॥

1. खोजने वाले 2. नौकर 3. फूल 4. कांटा 5. पतझण 6. बाग 7. स्वतन्त्र 8. मजा 9. मुहब्बत 10. परेशान 11. अलग होने का गम 12. आँख 13 आँसू।

पद 86

बड़ी मुश्किल से तलबगार[1] तुम्हारा हूं मैं।
देखते क्या हो ऐ सरकार तुम्हारा हूं।
जानता हूं मेरे दिल से तुम्हें नफरत होगी।
माफ कर देना गुनहगार[2] तुम्हारा हूं मैं॥
नहीं कुछ तुमसे छिपा मेरा ज्ञाहरोवातिन[3]।
यही हर वक्त है इज़हार[4] तुम्हारा हूं मैं॥
मेरी बरबादियों की भी तो करो कुछ परवाह।
किस तरह हो रहा लाचार तुम्हारा हूं मैं॥
उठा उठा के मुझे तुम कहां बिठाते हो।
कोई कर ले न गिरफ्तार तुम्हारा हूं मैं॥
तुम्हारी चाह में डूबे हुए दिल को लेकर।
हो रहा आज बेकरार तुम्हारा हू मैं॥
इस्क की राह में मैं कब से भटकता देखो।
काबिले दीदहूं[5] बीमार तुम्हारा हूं मैं॥
बहुत कुछ हो चुका अब यों न भुलावो प्यारे।
पथिक हूं जैसा खाक शार[6] तुम्हारा हूं मैं॥

1. चाहने वाला 2. पापी 3. अन्दर 4. सबूत 5. देखने के लायक 6. सेवक

पद 87

मुझे, भी मेरे सरकार देखते जाओ।
अर्ज[1] मेरी है बार-बार देखते जाओ ॥1॥

जिस तरह चाहो शक्तियों से आजमाओ मगर
कुछ जरा रूक के हालेजार[2] देखते जाओ ॥2॥

जेर[3] करना है करना है कर लो शौक से लेकिन।
इधर दिल दर्द की दरकार[4] देखते जाओ ॥3॥

दवा देना या न देना मगर नजर भरके।
तुम अपनी राह का बीमार देखते जाओ ॥4॥

यासगम[5] रंज मुझे वश्ल[6] की जगह मिलते।
क्योंकि मैं किसमते बदकार[7] देखते जाओ ॥5॥

अपनी उम्मीद लिए रो रहे अरमां कितने।
इन्हें करते हुए शूमार[8] देखते जावो ॥6॥

हिज्र[9] में शीजे ज़िगर[10] धड़कनें ये सीने की।
और क्या-क्या कहें मेरे यार देखते जाओ ॥7॥

रहम आ जायेगा इक रोज शब्र पर मेरी।
यही रहता है इन्तजार देखते जाओ ॥8॥

जुबाँ पर नाम रहे दिल में तुम्हारी तस्बीर।
पथिक के हो तुम्हीं तीमार[11] देखते जाओ ॥9॥

---

1. प्रार्थना, 2. बुरी दशा 3. नीचा दिखाना 4. जरूरत 5. आशा 6. मासूक का मिल जाना 7. बुरी किस्मत 8. गिनना 9. माशूक से न मिलना 10. जलन 11. बीमार का सेवक।

पद 88

मेरे देवता मुझको देना सहारा कहीं छूट जाये न दामन तुम्हारा।
बिना तेरे मन में समाये न कोई लगन का ए दीपक बुझाये न कोई ॥
तूही मेरी किश्ती तूही है किनारा कहीं छूट जाये न दामन तुम्हारा।
तेरे रास्ते से हटाती है दुनिया इशारे से मुझको बुलाती है दुनियाँ
मुझे बचा सकता तुम्हारा इशारा कहीं छूट जाये न दामन तुम्हारा॥
तुम्हारा ही गुणगान गाता रहूं मैं ह्रदय में तुम्हीं को ही ध्याता रहूं मैं ॥
तुम्हारे सिवा अब लगे कुछ न प्यारा कहीं छूट जाये न दामन तुम्हारा॥

पद 89

लुफ्त क्या नायाब हासिल आज की ताजीर में।
राह राहत इक नई आई नजर तदबीर में ॥1॥

क्या बतायें बात अपनी मुँह से कुछ कहते नहीं।
देख लो जो जप्त है इस रुह की तनबीर में ॥2॥

आपकी चश्में करम से आपही के साथ में।
देखता हूं जो कभी देखा न था तकदीर में ॥3॥

कुछ अजब सा लुफ्त है हैरत यह सब देखकर।
किस तरह राजे निहाँ हो खलकते तसबीर में ॥4॥

एक ही सूरत है जिससे हो सकूँगा कामयाब।
बँध गये गर पथिक से तुम प्रेम की जंजीर में ॥5॥

पद 90

हमें इस तरह से क्यों नाथ सुलाया तुमने।
बढ़ाके किसलिये वो प्यार घटाया तुमने ॥1 ॥
क्या खबर थी कि सबक इस तरह पढ़ना होगा।
रंज राहत का अजब राज़[1] बताया तुमने ॥2 ॥
देखते-देखते हैरत[2] से मैं हैरान हुआ।
खेल फितरत[3] का हमें खूब दिखाया तुमने ॥3 ॥
फिर भी रहमत[4] ही रही आपकी बड़ा शुक्र[5] किया।
हम तो मिट ही चुके पर पीछे बनाया तुमने ॥4 ॥
अब तो तसकीन[6] यही चश्में[7] करम होगा जरूर।
पथिक को सोते हुए जबकि उठाया तुमने ॥5 ॥

1. भेद 2. अचम्भा 3. चालाकी 4. दया 5. आभारी 6. तसल्ली 7. दया की दृष्टि।

पद 91

वख्त खुफ्ता[1] से मुझे आके जगा देना तुम।
राहे उल्फत[2] मुझे दिलबर[3] वो बता देना तुम ॥1 ॥
दिले नादाँन कहीं खींच ले जायेगा।
इसी मुश्किल से हमें आके बचा लेना तुम ॥2 ॥
यहाँ बस यार के दीदार[4] का प्यासा है दिल।

बस लगी दिल की यही आके बुझा देना तुम ॥3 ॥
फिक्र मंजिले मकसूद[5] किस तरह पहुचूँ।
वो तरीका ही मुझे आके बता देना तुम ॥4 ॥
यही फरियाद[6] है अब कैंदे[7] जहाँ से निकलूँ।
जाल फितरत से पथिक को भी छुड़ा देना तुम ॥5 ॥

1. सोना 2. प्रेम का मार्ग 3. प्रियतम 4. देखना 5. लक्ष्य 6. प्रार्थना 7. दुनियाँ की कैद।

पद 92

हमें यह सब कुछ सिखाया आपने।
देखिये क्या क्या दिखाया आपने ॥
देके मुझको ये फकीरी का लिबास,
मुश्किलों से है बचाया आपने ॥
जिस जगह खा ठोकरें नीचे गिरा वहीं से ऊपर उठाया आपने
कभी मुझको शख्तियों की वारसे रुलाया भी हँसाया भी आपने
क्या गजब की मार देखी प्यार भी मैं जहाँ रुठा मनाया आपने
मैं किसी काबिल नहीं बदकार हूं।
पर मेरी बिगड़ी बनायी आपने ॥
जहाँ रोने के सिवा कुछ भी न था।
वहीं पर खुश गीत गाया आपने ॥
आप ही के प्रेम का यह रूप है अपने हाथों से सजाया आपने।
लाख दुनियाँ हो मगर यह देख लो रंग अपना ही चढ़ाया आपने

पथिक की तकदीर तो ऐसी न थी।

अपने चरणों पर बिठाया आपने॥

पद 93

इन्तजारी में सवो रोज मुझे रहना है।

बहरे उलफत में खुले दस्त मुझे सहना है॥1॥

मिलेगी वश्ल की सूरत न जब तलक उनसे।

शौक के रन्जोगम फुरकत ये मुझे सहना है॥2॥

ऐसो इसरत की दरकार कभी है कुछ भी।

रमी है खाक क्या परवाह तन बरहना है॥3॥

वो सुने या न सुने ख्याल करें या न करें।

मैं तो कहता ही रहूँगा जो मुझे कहना है॥4॥

ऐसा कुछ हो कि पथिक पी के उन्हीं सा बन जाये।

एक प्याली मये वहदत की मुझे चाहना है॥5॥

पद 94

मैं उन सन्तन का दास जिन्होंने मन जीत लिया।

वो कबहूँ न रहत उदास जिन्होंने मन जीत लिया॥1॥

उनकी समीपता गंगा सी शीतल है।

उनका उर निर्मल दिखता कहीं न छल है।

उनके ढिग मिलत सुपास जिन्होंने मन जीत लिया।मैं०॥

उनके बचनों से मोह दूर हो जाता

मिलता विवेक भीतर का भ्रम खो जाता।

हो जाते पातक नास जिन्होंने मन जीत लिया।मैं०॥

वे राग रहित हैं प्रभु के ही अनुरागी।

जिनसे दुःख मिलता उन दोषों के त्यागी।

वे जग से रहत निरास जिन्होंने मन जीत लिया।मैं०॥

उनके जीवन में चिन्ता भय आने का।

अविवेक जनित मानसिक क्लेश पाने का।

मिलता न कहीं अवकाश जिन्होंने मन जीत लिया॥5॥

उनको जग में सब दिखता मंगलमय है

प्रतिकूल परिस्थिति में चितशान्त अभय है।

उन्हें माया न सकती फाँस जिन्होंने मन जीत लिया।मैं०॥

मैं पथिक उन्हीं को पुनि पुनि शीश नवाऊँ

उनसे ही सुमति आत्म रति सद्गति पाऊँ।

करूँ उनके निकट निवास जिन्होंने मन जीत लिया।मैं०॥

पद 95

इस जगत में सब का डेरा चन्द रोज।
देख लो संध्या सबेरा चन्द रोज ॥1॥
कितने यहाँ राजे महाराजे हो गये
कितने दारा और सिकन्दर खो गये।
हर किसी का है बसेरा चन्द रोज ॥2॥
कुटुम्बी जन और धन के आस पास।
जवानी के भरे तन के आस पास
लगा लो बस तुम भी फेरा चन्द रोज ॥3॥
गज़ब की मौजे बहारें थीं जहां।
आज चर्चा ही सुनी जाती वहाँ।
रहा करता पाख उजेरे चन्द रोज ॥4॥
जो रुलाते किसी निर्बल दीन को।
जो सताते हैं किसी धन हीन को।
उनका भी यह है जखीरा चन्द रोज ॥5॥
सोच लो क्या साथ अपने जायेगा।
कौन कितने दिन यहाँ रह पायेगा।
पथिक कर लो मेरा तेरा चन्द रोज ॥6॥

पद 96

(विनाशी पर विश्वास न करो)

उलझ मत दिल बहारों में, बहारों का भरोसा क्या।
सहारे टूट जाते हैं सहारों का भरोसा क्या ॥1॥
तमन्नायें जो तेरी हैं फुहारें हैं ये सावन की।
फुहारें सूख जाती हैं फुहारों का भरोसा क्या ॥2॥
दिलासे जो जहां के हैं सभी रंगी बहारें हैं।
बहारें रुठ जाती हैं बहारों का भरोसा क्या ॥3॥
तू इन फूले गुब्बारों पर अरे दिल क्यों फिदा होता।
गुब्बारे फूट जाते हैं गुब्बारों का भरोसा क्या ॥4॥
तू सम्बल नाम का लेकर किनारों से किनारा कर।
किनारे टूट जाते हैं किनारों का भरोसा क्या ॥5॥
अगर विश्वास करना है तो कर दुनियाँ के मालिक पर।
धनी अभिमानी लोभी दुनियाँदारों का भरोसा क्या ॥6॥
परम प्रभु कीशरण लेकर विकारों से सजग रहना।
कहाँ कब मन बिगड़ जाये विकारों का भरोसा क्या ॥7॥
तू अपनी अक्लमंदी पर विचारों पर न इतराना।
जो लहरों की तरह चंचल विचारों का भरोसा क्या ॥8॥

पद 97

सतगुरु तेरे दर्शन पाकर आँखों में सरुर आ जाता है।
चरणों में जब मैं पहुंचता हूं तो अपने में गरुर आ जाता है।
तुम सब लोकों के मालिक हो भक्तों के दिलों में उजाले हो।
इक झलक तेरी पड़ जाने से हर चीज़ पे नूर आ जाता है।
बिगड़ी तकदीर सम्हलती है तेरे दरबार में आने से।
खुशकिस्मत हैं जो तेरे निकट हो करके भी दूर आ जाता है।
जी भरके तुम्हें मैं देख सकूँ यह पूरी तमन्ना नहीं होती।
बेताब निगाहों के आगे परदा सा जरूर आ जाता है।
दुख दर्द के मारे आते हैं राहत के लिए तेरे दर पर।
रहमत का जलवा उमड़ करके दिल में भरपूर आ जाता है।
मिलती है भीख मुहब्बत की सबको तुमसे ही ऐ दाता।
जीवन है सफल उनका जिनको जीने का सहूर आ जाता है।

पद 98

निगाहों में तुम हो ख्यालों में तुम हो,
ये जन्नत नहीं है तो फिर और क्या है।
मेरे दिल को जो दर्द तुमने दिया है।
मुहब्बत नहीं है तो फिर और क्या है॥1॥
तुम्हारी दया की नजर देखते हम।

नजर का अनोखा असर देखते हम॥
निगाहों से मेरा दिल बदल देना,
यह हरकत नहीं है तो फिर और क्या है॥2॥
मेरे दिल में तुमने जो कुछ कर दिया है।
जहर की जगह अमृत भर दिया है।
तुम्हारी मधुर मुस्कराहट के पीछे,
शरारत नहीं है तो फिर और क्या है॥3॥
ये माना कि मेरी जरूरत न तुमको।
जो मुझसे हो पूरी कोई लत न तुमको।
मगर मीठी बातों से मन बांध लेना,
जरूरत नहीं है तो फिर और क्या है॥5॥
मेरी सारी बिगड़ी बनाई है तुमने।
मेरी जिन्दगी जगमगाई है तुमने।
जहाँ था अँधेरा वहीं रोशनी दी,
इनायत नहीं है तो फिर और क्या है॥6॥

पद 99

तुम्हें अपने प्रभु को पाना है
अब तो सबकी ममता तेजकर उनको ही अपनाना है॥1॥
तुम हो जहाँ, वहीं रुकना है कहीं न आना जाना है।
कुछ न देखकर सूनेपन से कभी न कुछ भय लाना है॥2॥
आते कठिन विघ्न कितने हों उनसे प्राण बचाना है।

सेवा पथ में जब चलना हो, कहीं न ठोकर खाना है॥3॥
इधर उधर कुछ भी न देखना, सुनना कुछ न सुनाना है।
केवल अपने जीवन-धन में, मन की सुरति जमाना है॥4॥
काम, क्रोध, लोभादि, प्रबलखल, इनके बेग मिटाना है।
तृष्णा पापिन साथ लगी है, जिससे पिण्ड छुड़ाना है॥5॥
साथ न देगा यह जो कुछ है, क्यों इसमें सुख माना है।
तजि आलस्य पथिक अब चेतो, व्यर्थ न समय बिताना है॥6॥

सन्त वचन

जो निज की देह में अटका है वही दूसरे में अटक जाता है। जो अटका है वही मूढ़ है। साधना सत्य को पाने की है असत्य को छोड़ने की नहीं। प्रकाश पाया जाता है अन्धकार छोड़ा नहीं जाता। ज्ञानी प्राप्ति को देखता है। अज्ञानी त्याग को देखता है। अन्तर में जब सत्य उपलब्ध होता है तब बाहर त्याग हो जाता है।

पद 100

कल्याण दुःखी जीवों का हे भगवान बता दो कब होगा।
जिसमें भवभ्रान्ति मिटा करती वह ज्ञान बता दो कब होगा॥
जिससे निज दोष दिखा करते, पापों अपराधों से डरते।
उस सद्विवेक का मानव में सम्मान बतादो कब होगा॥
अच्छे दिन बीते जाते हैं गुरुजन सब विधि समझाते हैं।
भोगस्थल से योगस्थल में प्रस्थान बता दो कब होगा॥

शीतलता जिससे आती है सारी अतृप्ति मिट जाती है।
वह नित्य प्राप्त है प्रेम सुधा, पर पान बता दो कब होगा॥
यद्यपि हैं सभी सुलभ साधन सोचते यही हैं मन ही मन।
जिससे कि "पथिक" प्रभुमय होवे वह ध्यान बता दो कब होगा॥

सन्त वचन

प्रश्न करो और अन्तस में ही उत्तर की प्रतीक्षा करो। मौन रहकर शून्य प्रतीक्षा ही समाधान का साधन है। सत्य के सम्बन्ध में बुद्धि से जाना जाता है परन्तु सत्य की अनुभूति के लिये चेतना में शान्त होना आवश्यक है। बुद्धि चुप होती है। तो अनुभूति बोलती है। विचार मौन हों तो विवेक जाग्रत होता है।

पद 101

सोचो तो सज्जनों यहाँ, स्वाधीन शान्ति पाते न क्यों।
सुख का ही अन्त दुःख देखकर परमार्थ-पथ में आते न क्यों।
शुभ या अशुभ कर्मों का फल, तुमको ही भोगना पड़े।
अब सावधान होके तुम निष्कामता को लाते न क्यों।
कितना ही तुमने तप किया, संयम दान जप किया।
सत्य को जानने न दे वह अभिमान मिटाते न क्यों।
मन में सुखोपभोग की तृष्णा भी एक आग है।
उसकी न पूर्ति होती, कभी त्याग से उसको बुझाते न क्यों।

सुन्दर मानव तन मिला, सत्संग का सुयोग भी।
ऐसा सुअवसर पाके पथिक जीवन सफल बनाते न क्यों।

सन्त वचन

अपने ही भाव से प्रत्येक अशान्त है। अपने ही भाव से शान्त भी हो सकता है। शान्ति के लिये अभ्यास आवश्यक नहीं है केवल सद्भाव ही पर्याप्त है। यह न पूछो कि शान्ति कहीं साथ सुविधि तथा सद्भाव एवं विवेक का योग उत्तम मंगल है। (5) सात्विक सुदृढ़ श्रद्धा, सहिष्णुता, उदारता नम्रता आस्तिकता उत्तम मंगल है।

चर्पट मञ्जरी का भावानुवाद

भज नारायण भज नारायण, नारायण भज मूढ़ मते॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं। गोविन्दं भज मूढ़ मते॥
बाल वयस सब खेल गँवाई तब तो रहा नहीं कुछ ज्ञान।
तरुणावस्था की मादकता में केवल तरुणी का मान।
वृद्ध भये तब रात दिवस, है नाना चिन्ताओं का गान।
दुर्लभ मानव तन पाकर के, किया न परमेश्वर का ध्यान।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं। गोविन्दं भज मूढ़ मते॥
बीती रात दिवस फिर आया, दिन बीता फिर आई रात।
सदा यही क्रम चलता रहता, नित्य शाम है नित्य प्रभात।
कभी ग्रीष्म है, कभी शिशिर है, कभी बसंत कभी बरसात।
इसी चक्र में वृद्ध जीव को, नचा रही है आशा बात।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं। गोविन्दं भज मूढ़ मते॥

केश पक गये, नेत्र कान भी, काम न देते मति गति भंग।
धीरे-धीरे दाँत गिर गये, सभी हो गए जीरण अंग।
अस्थि पिण्ड से खाल लटकती, बिगड़ गया वह सुन्दर रंग।
तब भी तृप्त न हुई वासना, श्वासा है आशा के संग।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं। गोविन्दं भज मूढ़ मते॥
जन्म मरण के इस बन्धन में, हो न सकेगा यूँ उद्धार।
जब तक तू आसक्त स्वार्थ बस, करता जग से ममता प्यार।
इस दुस्तर माया से मानव, तब तेरा होगा निस्तार।
जब मायापति परमेश्वर को, सौंप चुकेगा जीवन-भार।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं। गोविन्दं भज मूढ़ मते॥
जब तक तेरे तन मन धन से, पूरे होते सबके काम।
तब तक तुझसे प्रेम पूर्वक, लिपटा है परिवार तमाम।
जरा ग्रस्त होने पर तुझसे, सम्हल न पायेगा धन-धाम।
बात न पूछेंगे फिर कोई, सेंत न लेंगे तेरा नाम।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं। गोविन्दं भज मूढ़ मते॥
सलिल बिना है व्यर्थ सरोवर, धन से हीन व्यर्थ परिवार।
दान बिना धन धान्य व्यर्थ है, प्रेम दया बिन व्यर्थ विचार।
सद्गुण बिन सौन्दर्य व्यर्थ है, सेवा बिना व्यर्थ श्रृंगार।
सद्विवेक बिन कर्म व्यर्थ है, भक्ति ज्ञान बिन जीवन-भार।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं। गोविन्दं भज मूढ़ मते॥
मूरख इतना मोहित होकर, है जिस सुन्दरता पर लीन।
मांस भरे स्नायु जाल से, कसे पिण्ड के ही आधीन।
जिस विधि अपने रुधिर स्वाद में, श्वान मानता सुख मतिहीन।

यही दिशा है विषयी नर की, तृष्णा से रहता अति दीन।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं। गोविन्दं भज मूढ़ मते॥
अपने ही स्वारथ के भूखे, कर न सके कुछ पर-उपकार।
अपनी क्षुधा-पूर्ति के कारन, झाँके किनके किनके द्वार।
मूड़ मुड़ाये जटा रखाये, भेष बनाये विविध प्रकार।
तब तक शान्ति नहीं जीवन में, जब तक मिटे न विषय-विकार।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं। गोविन्दं भज मूढ़ मते।
त्यागी बनके वन-वन डोलै, करतल भिक्षा तरु तर बास।
किन्तु जहाँ लौं आशा तृष्णा, तब तक पाता रहता त्रास।
दृष्टि खोलकर देख स्वयं को, नित्य प्राप्त है ज्ञान प्रकाश।
जिसके द्वारा ही होता है, निज अज्ञान तिमिर का नाश।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं। गोविन्दं भज मूढ़ मते॥
अब न भूल तू इस माया में, त्याग अहंता ममता मान।
निज धन से दीनों दुखियों को, लोभ छोड़कर दे कुछ दान।
असत संग तज सत्य संगकर, धारण कर गीता का ज्ञान।
पुनि विवेक समता के द्वारा, आत्म तत्त्व को ले पहिचान।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं। गोविन्दं भज मूढ़ मते॥
श्रद्धा तत्परता संयम से, नहीं पड़ सकेंगे यम फन्द।
अवसर खोकर वे ही रोते जो हैं सुखा सक्त मति मंद।
उस दृढ़ व्रती बुद्धि योगी के मिट जायेंगे सब दुख द्वन्द।
प्रज्ञा और प्रेम के द्वारा, पा जायेगा परमानन्द।
भज गोविन्दं भज गोविन्दं। गोविन्दं भज मूढ़ मते॥

जो कुछ तुझको मिला अभी तक देख कि इसका दाता कौन?
जिसको तूने नहीं बनाया उसका है निर्माता कौन?
जब तू सोता, कौन जागता, तुझको सदा जगाता कौन?
पथिक देख ले, कौन सदा रहता है, आता जाता कौन?
भज गोविन्दं भज गोविन्दं। गोविन्दं भज मूढ़ मते॥
भज नारायण भज नारायण। नारायण भज मूढ़ मते॥

सन्त वचन

जो इन्द्रियों के द्वारा प्रतीत होने वाले रूप रसादि सुखों में अथवा विनाशी नाम रूप में अटका रहता है वही मूढ़ मति वाला है। भगवद भजन से ही मूढ़ता दूर होती है। जिससे जगदाकार वृत्ति भगवदाकार बन जाये वही भजन है। अपना सब कुछ सेवा में समर्पित कर देने पर भजन पूर्ण होता है। सबसे निराश होने पर ही कोई प्रभु का भजन कर पाता है।

विवेकी मानव

वे वीर विवेकी मानव हैं, जो मोह-नींद से जाग सके।
उनके ही दुःख मिटेंगे जो निज कृत दोषों को त्याग सके॥
वे श्रमी संयमी होते हैं, वे शुभ कर्मी सद्गति पाते।
जो शक्ति समय का सदुपयोग कर, भोग भूमि से भाग सके॥
बेचैन बनाती जो सबको, वह चिंता उनकी मिट जाती।
जिनका चित चाह मुक्त होकर, हरि-चिन्तन में लाग सके॥
है साधक का पुरुषार्थ यही, सारी दुर्बलताएँ तज दे।

कामना रहित होकर जो अपना, हृदय प्रीति से पाग सके॥
सबका दाता जगदीश्वर है, पूरी होती सबके मन की।
तू पथिक भिखारी ऐसा बन, प्रभु से प्रभु को ही माँग सके॥

सन्त वचन

जिसे दोषों के त्याग का साहस है वही वीर पुरुष स्वतन्त्रता प्राप्त करता है। वासना अहंता ममता से भरा चित्त बाह्य त्याग से शान्ति न पायेगा। चित्त का त्याग ही त्याग है। त्याग की चाह भी भोगी अहंकार में होती है।

प्रभु तुम्हींमय हो रहे हम

विमुख हो जड़मय बने थे, मोह दल-दल में सने थे।
बुद्धि के आगे घने अज्ञान के बादल तने थे।
आज ज्ञानालोक में, निज कालिमा को धो रहे हम॥1॥
किस तरह हम शान्ति पाते, क्यों तुम्हारी शरण आते।
स्वयं ही यदि कृपा करके तुम नहीं हमको जगाते।
स्वप्न में अटके हुए थे, मोह निशि में सो रहे हम॥2॥
कुछ न पाया कहीं जाकर, साथ की पूँजी गवाँकर।
जहाँ से हम चले थे ठहरे वहीं के वहीं आकर।
अभी तक निज प्राप्त की ही खोज में थे खो रहे हम॥
इन्द्रियाँ थी ही बहिर्मुख, मन सदा था चाहता सुख।
उसी सुख के अन्त में हम भोगते आये महा दुःख।
पथिक अब आनन्द में हैं जो कभी थे रो रहे हम॥

सन्त वचन

अज्ञानी स्वप्न में ही जागते हैं स्वप्न में ही सोते हैं। 'मैं' को पूर्णतया जान लेना ही उससे मुक्ति पाना है। अतः 'मैं' को जानो। जो अभी है यहीं है उसे भविष्य के लिये क्यों टालते हो? प्रभु उन्हीं के लिये हैं जो प्रभु के प्रति उपस्थित हैं। जो और जैसा बनना चाहता है वह अपने को खो देता है।

मन के हटते ही उस रिक्त स्थान में जिसका अनुभव होता है वही आत्मा है। वही सत्ता है उससे एक होते ही प्रभुमय हो जाना है।

आन्तरिक त्याग की महिमा

यह सत्य वचन है पूर्ण त्याग बिन हम चिरशान्ति न पा सकते॥
सच्चे प्रेमी होकर ही जग में पूर्ण त्याग अपना सकते॥
अब समझे यह सुख की तृष्णा अगणित अपराध कराती है।
अधिकार मान धन की लिप्सा कितने ही द्वार घुमाती है।
कितनी ही सिद्धि प्रसिद्धि मिले पर मन को चैन न आती है।
जब तक संतोष नहीं होता सबको कामना नचाती है।
हम निज स्वरूप में नित्य तृप्त होकर कामना मिटा सकते॥1॥
हम बन जायें तपसी विरक्त कौपीन मात्र लेकर तन में।
इतने पर भी यदि भोगों की कामना अतृप्त भरी मन में।
कुछ भक्तों के मिलते ही हम फिर महल बना सकते वन में।
साधना भूल सकती है तब तो धनिकों के आराधन में।

जब तक गुरू ज्ञान न हो तबतक पग-पग में धोख खा सकते ।।2 ।।
ह॰ सन्यासी हो जायें पर यदि कीर्ति प्रतिष्ठा है प्यारी।
सभव है छोटा घर तजकर हम बन जायें फिर मठधारी।
तब तो चाहेंगे आश्रम में आ जायें ऊँचे अधिकारी।
गुरूजन की नहीं गवर्नर के स्वागत की होगी तैयारी।
तब लक्षाधीशों के पीछे ईश्वर का ध्यान भुला सकते ।।3 ।।
हम श्रमी संयमी साधक हों इसके ही लिये मिला तन है।
जीवन को मुक्त बनाने का बस असंगता ही साधन है।
यह भी समझे! बन्धन का कारण यह तन नहीं किन्तु मन है।
उलझन भी तब तक है जब तक मस्तिष्क हृदय में अनबन है।
हम सद् विवेक के द्वारा ही सारी उलझन सुलझा सकते ।।4 ।।
हम मान रहे हैं अपने को जग में यदि सर्वोत्तम ज्ञानी।
हैं धनी कुलीन शक्तिशाली विद्वान् विचारक विज्ञानी।
देखना यही है अन्तर में कितने लोभी कितने दानी।
उर के कठोर या कोमल-चित्त हैं नत विनम्र या अभिमानी।
हम आत्म निरीक्षण करके जीवन में सुन्दरता ला सकते।।5 ।।
हम जन नेता हो सकते हैं नेतृत्व स्वयं कर करलें जब।
सुख बाँट सकेंगे दुखियों को अपने अभाव दुख हरलें जब।
तब उठा सकेंगे दलितों को हम उनके बीच उतर लें जब।
हम से तब जन-सुधार होगा मन बस कर स्वयं सुधर लें जब।
हम भीतर से शीतल होकर ही पर का ताप हटा सकते।।6 ।।
बन सकते सरस कथा वाचक जब ध्यान कभी धन में न रहे।

पूजा में क्या चढ़ पायेगा, यह उथल-पुथल मन में न रहे।
श्रोता दर्शन कर मुग्ध बने वह वेष भूषा तन में न रहे।
निज भाव भगवदाकार बने, जब प्रीति धनिक जन में न रहे।
हम सन्तोषी निस्पृह होकर सुन्दर-हरि कथा सुना सकते ।।7 ।।
हम उपदेशक बन सकते जब लोभादि विकारों को छोंड़ें।
हम पा सकते सत्यानुराग जब असत् सुखों से मन मोंड़ें।
यदि सर्व हितैषी होना है, ममता के सब नाते तोडें।
हम भक्ति सुलभ कर पायेंगे जब प्रीति एक प्रभु से जोड़ें।
पहले हम अपने को समझें फिर औरों को समझा सकते ।।8 ।।
जीवन में सद्गति तब निश्चित जब लोभ काम वश रहें नहीं
सेंवा के बदले में समाज से मान भोग कुछ चहें नहीं।
जो कष्ट मिलें, सब सह जायें, हिंसा अनीति को गहें नहीं।
शम दम धीरज को धारण कर क्रोधाजित बनें कटु कहें नहीं।
हम दैवी सम्पद् के द्वारा जीवन आदर्श बना सकते ।।9 ।।
परमार्थ सिद्धि हम पा सकते जब स्वार्थ पूर्ति की चाह न हो।
सेवा से आत्म शुद्धि होगी जब सुख दुख की परवाह न हो।
प्रियतम से प्रीति मिला देगी जब अन्य किसी की राह न हो।
हम मुक्त भक्त हो जायें जब कही शिथिल उत्साह न हो।
हम पथिक प्रभु कृपा के बल :ही परम लक्ष्य तक जा सकते ।।10 ।।
सन्त वचन—साधक को अपने में प्राप्त ज्ञान से ही मुक्ति मिल सकती है। प्राप्त प्रेम से ही भक्ति सुलभ दीख सकती है और स्वयं के त्याग से ही शान्ति की अनुभूति हो सकती है। अन्य के ज्ञान

का भोग हो सकता है मुक्ति नहीं मिलेगी। अन्य के प्रेम का भोग हो सकता है भक्ति नहीं हो सकती। अन्य के त्याग का भोग हो सकता है शान्ति नहीं मिल सकती। जो परमात्मा को पाये बिना उसे पाने के लिये मिले हुए का त्याग करते हैं वही त्याग के अहंकारी बनते हैं।

समाप्तम्